सत्यमेव जयते

आभा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़

www.aghry.nic.in / https://cag.gov.in/ag/haryana/hi

श्री के.एस. सुब्रमण्यन, उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (मानव संसाधन एवं विधिक) का विजिट

सुश्री संध्या शुक्ला, उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (रिपोर्ट स्टेट्स - उत्तरी क्षेत्र) का विजिट

आभा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

अप्रैल 2024 - मार्च 2025

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

हिंदी पखवाड़ा

हिंदी दिवस/पखवाड़ा
पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

हिंदी दिवस/पखवाड़ा
पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

अनुक्रमणिका

अंक: 103-106
वर्ष 2024-25

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

क्र.सं.	विवरण			पृ.सं.
1	संदेश- अमित शाह, गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार			05-06
2	मुख्य संरक्षक की कलम से			07
3	आभा परिवार			08
4	संपादकीय			08
5	पाठकों की कलम से			9-12
6	राजभाषा हिंदी की प्रगति में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान	लेख	संजीव कुमार	13-14
7	चंद्रमा पर भारतोदय: विश्व को चमत्कृत करने वाली उपलब्धि	लेख	डॉ. लाखा राम	15-17
8	सोशल मीडिया: आज का युग और चुनौतियां	लेख	कमल	18-19
9	जनसंख्या में गिरावट और वृद्धावस्था के आर्थिक निहितार्थ: उत्पादकता और विकास के लिए चुनौतिया	लेख	अम्बुज कुमार	20-21
10	पर्यावरण की महत्ता	लेख	धरमवीर	22-23
11	भीतर का दरिया - मन	लेख	प्रिया शर्मा	24-25
12	रक्तदान: जीवन रक्षा का महान कार्य	लेख	प्रेम ग्रोवर	26-28
13	प्रकृति प्रेमी के लिए विशाखापत्तनम की खूबसूरती	लेख	ज्योति कुमारी	29-30
14	मुस्कान की ताकत	लेख	मुनीष भाटिया	31-32
15	केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम की यात्रा: आध्यात्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव	यात्रा वृत्तांत	देवीदत्त जोशी	33-34
16	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	कहानी	अमरदीप सिंह	35-36
17	मिट्टी का जोड़	कहानी	गुरु सरूप बंसल	37-38
18	मेरी राजस्थान यात्रा	यात्रा वृत्तांत	सोनू कुमार	39-40
19	दृष्टिकोण	कहानी	गुरु सरूप बंसल	41-42
20	नई सुबह	लेख	प्रवीन कुमार अरोड़ा	43-45
21	भारत की प्रथम महिला शिक्षिका- सावित्रीबाई फुले	लेख	मनु अनेजा	46
22	असली मित्र	लेख	रीना	47

क्र.सं.	विवरण			पृ.सं.
23	तन्हाई	कविता	मुनीष भाटिया	48
24	आजकल की शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य	कविता	अमरदीप सिंह	48
25	जिंदगी की कहानी	कविता	महेन्द्र कुमार यादव	49
26	जीवन का सफर	कविता	महेन्द्र कुमार यादव	49
27	स्वतंत्रता: एक अनुभूति	कविता	श्रीयांश गौनियाल सुपुत्र अरूण कुमार	50
28	पापा की परी	कविता	अर्चना रानी	50
29	कार्यालय के प्रांगण से			51-55
30	सेवानिवृत्ति / स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति			58
31	श्रद्धांजलि			58
32	हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची (2024-25)			59
33	सरकारी काम-काज में मूल रूप से हिंदी टिप्पण/ आलेखन आदि के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार- (2023-24)			59
34	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम			60

मुख्य पृष्ठ : राजभाषा विभाग द्वारा इस कार्यालय को वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन हेतु तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रिय पाठकगण,

जय हिंद, जय हिंदी

हिंदी पत्रिका 'आभा' आपके निरंतर समर्थन और प्रेम से निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आपकी रुचि और सहभागिता ही हमारी प्रेरणा का स्रोत है। हमारा उद्देश्य पत्रिका 'आभा' को और अधिक रोचक, उपयोगी, और प्रासंगिक बनाना है, ताकि यह पत्रिका आपकी अपेक्षाओं पर खरी उतरे। इसी दिशा में, हम आपसे पत्रिका आभा के संबंध में आपके बहुमूल्य सुझाव और राय आमंत्रित करते हैं। आपकी प्रतिक्रिया हमें पत्रिका की सामग्री, प्रस्तुति, और विषय-वस्तु को बेहतर बनाने में सहायता करेगी।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

नोट: रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों/संकलनकर्त्ताओं के अपने हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

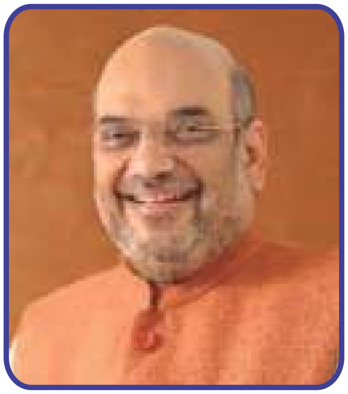

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

डॉ. आशुतोष शर्मा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

मुख्य संरक्षक की कलम से

हिंदी पत्रिका 'आभा' के नवीन अंक के प्रकाशन पर मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका एक साहित्यिक मंच ही नहीं, अपितु राजभाषा हिंदी की गरिमा, इसके सांस्कृतिक महत्व और इसके व्यापक प्रभाव को उजागर करने का एक प्रयास भी है। हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करती हैं।

हिंदी, भारतीय संस्कृति की वाहक है और इसकी उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति निहित है। राजभाषा हिंदी, भारत सरकार की नीतियों, जन उपयोगी योजनाओं, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारियों को आम जन-मानस तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। इसलिए, हमारा यह संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। हिंदी न केवल सरकारी काम-काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम भी है। राजभाषा हिंदी की उदारता, व्यापकता और समृद्ध शब्द भंडार के कारण ही इसकी पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में प्रेरक सिद्ध होगा।

सभी रचनाकारों के साथ-साथ संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई और आशा करता हूं कि हिंदी पत्रिका 'आभा' प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर रहकर हिंदी की विकास यात्रा में अपना विशिष्ट योगदान देती रहेगी।

(डॉ. आशुतोष शर्मा)

आभा परिवार

स्वत्वाधिकार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा

प्रकाशनः

"आभा" हिंदी पत्रिका

मुख्य संरक्षक

डॉ. आशुतोष शर्मा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संपादक

श्री कृष्ण सिंह,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप-संपादक

श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

सहायक संपादक

श्री देवीदत्त जोशी, सहायक पर्यवेक्षक
सुश्री विभा यादव, कनिष्ठ अनुवादक
डॉ. लाखा राम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मूल्य- राजभाषा हिंदी के प्रति सत्य-निष्ठा

संपादकीय.......

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह कार्यालय हिंदी पत्रिका 'आभा' के नूतन अंक के माध्यम से भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों की झलक भी मिलती है।

हिंदी भाषा संपूर्ण भारत को एक माला में पिराने का कार्य कर रही है। हिंदी केवल भाषा ही नहीं अपितु हमारी सभ्यता, संस्कृति और पहचान का माध्यम भी है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति को जीवंत बनाए रखा है। आज हिंदी देश-विदेश के कोने-कोने तक पहुंचकर अपनी सरलता-सहजता का बोध करा रही है, जिससे हिंदी को विश्व पटल पर नई पहचान मिल रही है। हम सभी के सामूहिक प्रयासों से ही हिंदी का और अधिक विकास होगा और इसका प्रसार-प्रसार बढ़ेगा।

मुख्य संरक्षक के मार्गदर्शन व रचनाकारों तथा संपादक मंडल के प्रयासों से 'आभा' पत्रिका के इस नवीन अंक का सफल प्रकाशन हो सका है। सभी के सतत प्रयासों के फलस्वरूप ही पत्रिका की विशिष्टता में निरंतर निखार आया है। मैं उन सबके प्रति आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य विचार और सुझाव पत्रिका को और समृद्ध बनाएंगे, जिनका हमें बेसब्री से इंतजार रहेगा। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(कृष्ण सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

पाठकों की कलम से.....

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएं उल्लेखनीय एव सराहनीय हैं। श्री संजीव कुमार का लेख संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व, सुश्री हिताक्षी शर्मा का लेख भगवान बीमार हैं, श्री सोनू कुमार की नई राह, डॉ. लाखा राम की नारी प्रकृति एवं ईश्वरीय जगत की अद्भुत पवित्र वरदान, श्री मनु अनेजा का संघर्ष-जीवन का दूसरा नाम तथा सुश्री विभा यादव का लेख वाणी में विनम्रता विशेष रूप से प्रसंशनीय हैं।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर - 440 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका 'आभा' के 99-102 अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण व पृष्ठ सज्जा अत्यंत आकर्षक व सुंदर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय व ज्ञानवर्धक हैं। नई राह, जागृति, केमिकल युग, सिर्फ तुम, चुप रहती हूं, शिक्षा विशेष रूप से उल्लेखनीय व रोचक रचनाएं हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भषिष्य के लिए शुभकामनाएं।

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली - 110 001

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं प्रशंसनीय व पठनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। रचनाकरों एवं पत्रिका के कुशल संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़ - 160 017

आपके कार्यालय से प्रकाशित 'आभा' के 99-102वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक अद्‌वितीय है। श्री संजीव कुमार की 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व', श्री सोनू कुमार की 'नई राह',

डॉ. लाखा राम की 'नारी प्रकृति एवं ईश्वरीय जगत का अद्भुत पवित्र वरदान' एवं सुश्री मनमीत कौर की 'मां की ममता' आदि रचनाएं अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक व उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, चण्डीगढ़ - 160 017

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'आभा' के अंक 99-102 वर्ष 2023-24 के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी वो हैं- पिता, रक्तदान, मानव जन्म, सिर्फ तुम, बच्चा सा दिल, चुप रहती हूं, बेटी तथा मेरी मां आदि।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700 064

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों का उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु, चेन्नई - 600 018

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई धन्यवाद।

पत्रिका के इस अंक में संकलित सभी रचनाएं पठनीय एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण एवं इसकी साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है। राजभाषा हिंदी की विकास की दिशा में आपकी पत्रिका का योगदान सराहनीय है। संपादक मंडल के साथ-साथ सुरुचिपूर्ण रचनाओं से पत्रिका को सुंदर बनाने वाले सभी रचनाकार भी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई - 18

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102 अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय है। सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर श्री संजीव कुमार द्वारा रचित लेख 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व', श्री सोनू कुमार द्वारा रचित लेख 'नई राह' तथा सुश्री मनमीत कौर द्वारा रचित कविता 'मां की ममता' अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी., सैक्टर 17-ई, चण्डीगढ़ - 160 017

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102 अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक है। श्री सोनू कुमार की 'नई राह', डॉ. रीना देवी की 'प्राकृतिक चिकित्सा', श्री अंकित की 'भारतीय न्यायिक प्रणाली' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य ए.जी.सी.आर. भवन, नई दिल्ली-110002

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'आभा' के अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री संजीव कुमार का लेख 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व', सुश्री हिताक्षी शर्मा का लेख 'भगवान बीमार हैं', श्री कपिल देव का लेख 'चण्डीगढ़ से उत्तरकाशी की यात्रा' एवं श्री मनीष देव का लेख 'शिक्षा वह है जो विद्यालय में सीखी गई बातों को भूल जाने के बाद भी याद रहती है' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री मुनीष भाटिया की कविता 'मानव जन्म', सुश्री मनमीत कौर की कविता 'मां की ममता' एवं सुश्री प्रिया शर्मा की कविता 'चुप रहती हूं' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय) इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली - 110 002

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102 अंक की प्रति की प्राप्ति हुई है। आपकी पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है।

'आभा' के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'आभा' की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। 'आभा' में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से सुश्री हिताक्षी शर्मा की रचना 'भगवान बीमार हैं', श्री सोनू कुमार की रचना 'नई राह', श्री अमरदीप की रचना 'केमिकल युग', श्री अश्वनी तोमर की रचना 'साइबर क्राइम' इत्यादि सराहनीय हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी ई-पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक का ई-संस्करण ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका की आंतरिक साज-सज्जा, विषय एवं कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र स्वत: ही पाठकों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल भावपूर्ण, प्रेरणादायी व ज्ञानवर्धक हैं बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी उजागर करते हैं। विशेष तौर पर 'भगवान बीमार हैं', 'जागृति', 'नई राह', 'मॉर्डन सावित्री' आदि रचनाएं प्रेरक, रुचिकर एवं सराहनीय हैं। राजभाषा हिंदी के विकास एवं कार्यान्वयन की दिशा में यह एक स्वर्णीम प्रयास है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार निश्चय रूप से बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर - 751 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्रिका 'आभा' का 99-102वां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। हमारे समाज में शारीरिक गतिविधियों के प्रति घटते रुझान के समय में ओलंपिक के दिग्गज खिलाड़ियों के चित्र वाला पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत प्रेरणामयी है। पत्रिका में समाविष्ट यात्रा वृतांत, संस्मरणों, लेखों और कविताओं में प्रस्तुत विचारों में नवीनता की महक आती है। श्री हरमिन्दर सिंह द्वारा रचित 'बेटी' नामक कविता पिता-पुत्री के प्रेम को उजागर करती वात्सल्य रस से भरपूर कविता है वहीं श्री हरभजन सिंह की कविता 'मॉर्डन सावित्री' आधुनिक सामाजिक प्रसंगों से प्रेरित व्यंग्य करती है। सुश्री विभा यादव का लेख 'वाणी में विनम्रता' कबीर दास जी के मीठी बोली बोलने के लिए प्रेरित करने वाले विचारों से फिल्म 'धर्म कर्म' के सुप्रसिद्ध आधुनिक गीत 'जग में रह जाएंगे प्यारे तेरे बोल' पर समाप्त होता है और प्राचीनता से नवीनता का सफर तय करता है। सुश्री हिताक्षी शर्मा के लेख का शीर्षक 'भगवान बीमार हैं' पाठकों का ध्यान आकर्षित करने वाला है। प्रथम दृष्यता तो यह लेख हास्य पथ का अनुसरण करने वाला प्रतीत होता है किंतु इसका निष्कर्ष भक्ति भावना वाला है। पत्रिका में शामिल चित्र आकर्षक है तथा कागज की गुणवत्ता उत्तम है। पत्रिका के अंत में सम्मिलित 'श्रद्धांजलि' दिवंगत साथियों को याद करने के लिए बहुत अच्छी पहल है। यदि दिवंगत साथी का चित्र और जन्म की तिथि भी साथ ही में प्रकाशित हो जाए, तो इस कॉलम को अधिक यथार्थ बनाया जा सकता है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभेच्छाएं।

महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, चण्डीगढ़-160017

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का अंक 99-102, वर्ष 2023-24 की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका का आवरण अत्यंत सुंदर और कलात्मक है, जो पहली ही दृष्टि में आकर्षित करता है। पत्रिका का डिजाइन और रूपरेखा न केवल पेशेवर दृष्टिकोण से बेहतरीन है, बल्कि इसमें उपयोग की गई रंग योजना एवं तत्व संयोजन भी प्रभावशाली है। विशेष रूप से पत्रिका में प्रकाशित तस्वीरें, कार्यालय की गतिविधियों और कार्यक्रमों को क्रमवार ढंग से दर्शाने में सफल रही है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख अत्यंत सूचनाप्रद और समृद्ध है, जिनमें कार्यालय की विविध गतिविधियों, आगामी कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। यह न केवल पाठकों को कार्यालय गतिविधियों से अवगत कराती हैं, बल्कि उन्हें इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित भी करती हैं। विशेष रूप से, पत्रिका में प्रकाशित पूरे वर्ष में होने वाले कार्यक्रमों का सारांश यह दर्शाता है कि कार्यालय विभिन्न पहलुओं पर समर्पण से कार्य कर रहा है एवं भावी गतिविधियों के लिए पाठकों के मन में उत्सुकता बनी रहती है। पत्रिका के समग्र संकलन, संयोजन एवं चित्रण के लिए संपादक मंडल का प्रयास सराहनीय है। हम आशा करते हैं कि 'आभा' का उत्कृष्टता के लिए यह प्रयास बना रहेगा एवं कार्यालय की गतिविधियों, योजनाओं के साथ विविधताओं को उद्घाटित करने का यह एक सशक्त माध्यम बनी रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं आगामी अंक की प्रतिक्षा रहेगी।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा, चण्डीगढ़ - 160 020

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'आभा' का नवीनतम अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री अश्वनी तोमर का लेख 'साइबर क्राइम', श्री संजीव कुमार का लेख 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व', श्री अंकित का लेख 'भारतीय न्यायिक प्रणाली', श्री प्रेम ग्रोवर की कविता 'रक्तदान' आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय बेंगलोर - 560 001

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। इस पत्रिका में संस्मरण, लेख, कविताओं आदि को समाहित करती रचनाएं अद्भुत एवं विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह हैं, जिसमें कुछ रचनाएं यथा नई राह (सोनू कुमार) तथा नारी: प्रकृति एवं ईश्वरीय जगत का अद्भुत पवित्र वरदान (डॉ. लाखा राम) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सत्त प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार - 800 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'आभा' के अंक 99-102 वर्ष 2023-24 की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद तथा उच्च कोटि की हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं प्रशंसनीय हैं। श्री संजीव कुमार का लेख संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व, श्री मुनीष भाटिया का लेख तारीफ करना भी है जिंदादिली, सुश्री हिताक्षी

शर्मा का लेख भगवान बीमार हैं, श्री कपिल देव का लेख चण्डीगढ़ से उत्तरकाशी की यात्रा, श्री सोनू कुमार का लेख नई राह, डॉ. लाखा राम का लेख नारी: प्रकृति एवं ईश्वरीय जगत का अद्भुत पवित्र वरदान, श्री मनु अनेजा का लेख संघर्ष-जीवन का दूसरा नाम तथा सुश्री प्रिया शर्मा की कविता चुप रहती हूं आदि रचनाएं प्रेरक, रुचिकर एवं सराहनीय हैं।

विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग - 793 001

आपके कार्यालय से हिंदी पत्रिका 'आभा' के 99-102 अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'भगवान बीमार हैं', 'जागृति', 'पिता', 'शहीद के पिता की मनोदशा', 'मार्डन सावित्री' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्यप्रदेश ऑडिट भवन, झांसी रोड, ग्वालियर

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'आभा' की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदेव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मंडल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला -799 006

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका आभा के 99-102वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं समायोजित एवं ज्ञानवर्धक होने के साथ संग्रहणीय भी हैं। पत्रिका के विभिन्न रचनाओं में श्री संजीव कुमार का लेख 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व', श्री मनीष भाटिया का लेख 'तारीफ करना भी जिंदादिली', श्री प्रवीन कुमार अरोड़ा का व्यंग्य 'जागृति', श्री रामकुमार की कविता 'अध्यात्म की ओर', सुश्री शीनू शर्मा की कविता 'हरियाणा रोडवेज की बस में सफर' विशष उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की रूपसज्जा भी मनमोहक हैं।

पत्रिका के इस अंक के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा और हकदारी) गुजरात, राजकोट-360 001

आपके कार्यालय की पत्रिका 'आभा' के 99-102वें अंक वर्ष 2023-24 की ई-प्रति की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में श्री संजीव कुमार की रचना 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व', श्री मुनीष भाटिया की रचना 'तारीफ करना भी है जिंदादिली', सुश्री हिताक्षी शर्मा की रचना 'भगवान बीमार हैं', श्री ललित कुमार की रचना 'बाल श्रम-एक ग्रामीण समस्या', श्री अमरदीप की रचना 'केमिकल युग', श्री अश्वनी तोमर की रचना 'साइबर क्राइम', डॉ. रीना देवी की रचना 'प्राकृतिक चिकित्सा', श्री मनु अनेजा की रचना 'संघर्ष- जीवन का दूसरा नाम', श्री अंकित की रचना 'भारतीय न्यायिक प्रणाली', श्री मनीष देव की रचना 'शिक्षा वह है बाद भी याद रहती है', सुश्री विभा यादव की रचना 'वाणी में विनम्रता', सुश्री ज्योति कुमारी की रचना 'पिता', सुश्री शीनू शर्मा की रचना 'शहीद के पिता की मनोदशा', सुश्री मनमीत कौर की रचना 'मां की ममता', सुश्री हर्षिता शर्मा की रचना 'बच्चा सा दिल', श्री महेंद्र कुमार यादव की रचना 'कभी खुद से भी बातें कर लिया करो', श्री हरभजन सिंह की रचना 'मार्डन सावित्रि', श्री कमल की रचना 'परीक्षा की प्रतीक्षा-एक अंतहीन सफर', डॉ. निष्ठा हुडा की रचना 'खुदा तेरी रोशनी', सुश्री खुशी वत्स की रचना 'हरियाणा रोडवेज की बस में सफर' आदि रचनाएं ध्यानाकर्षित करती हैं।

पत्रिका के माध्यम से 'क' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही उत्तम है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर ओलंपिक खिलाड़ियों का चित्र बहुत ही सुंदर है और जो साथ में अन्य सभी युवाओं के लिए प्रेरणादायक भी है। अंतिम पृष्ठ पर चण्डीगढ़ स्थित शहर के अन्य दर्शनीय स्थलों ने अंतिम पृष्ठ को और भी सुंदर बना दिया है। कार्यालयी चित्रों ने पत्रिका को और भी सुंदरता प्रदान की हैं। आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'गिरनार' परिवार को पत्रिका के अगले अंक की प्रतिक्षा रहेगी।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360 001

राजभाषा हिंदी की प्रगति में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान

संजीव कुमार

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है, जहां 22 अनुसूचित भाषाओं के साथ-साथ सैकड़ों बोलियां और उपभाषाएं बोली जाती हैं। हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह देश की सांस्कृतिक और प्रशासनिक एकता का महत्वपूर्ण माध्यम है। संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, और यह देश के विभिन्न हिस्सों में संवाद का सेतु बनाती है। हिंदी की इस प्रगति और स्वीकार्यता में भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान अपरिहार्य रहा है। हिंदी का उद्भव और विकास, भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता से गहराई से जुड़ा है और इसका विकास क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों के साथ निरंतर अंतर्क्रिया से हुआ है।

मध्यकाल में अवधी, ब्रज और मैथिली जैसी बोलियों ने हिंदी साहित्य को आकार दिया। तुलसीदास की रामचरितमानस अवधी में, सूरदास की भक्ति कविताएं ब्रज में और विद्यापति की रचनाएं मैथिली में आदि महान क्षेत्रीय रचनाओं ने हिंदी साहित्य की एक ठोस नींव रखी। आधुनिक हिंदी का आधार खड़ी बोली है, जो दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती थी। इसने पंजाबी, हरियाणवी, राजस्थानी और उर्दू के शब्द और संरचनाएं समावेश किए जिससे यह अधिक समावेशी और लचीली बनी। भोजपुरी, बुंदेली और छत्तीसगढ़ी जैसी बोलियां हिंदी की उपभाषाएं मानी जाती हैं। इन बोलियों ने हिंदी को जनसामान्य की भाषा बनने में मदद की क्योंकि ये स्थानीय समुदायों की भावनाओं और संस्कृति को व्यक्त करती थीं। क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी साहित्य को न केवल समृद्ध किया बल्कि उसे राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्षेत्रीय भाषाओं के लोकगीत, लोककथाएं और कहावतें हिंदी साहित्य में शामिल हुईं। राजस्थानी लोककथाएं जैसे पद्मावत और भोजपुरी लोकगीत हिंदी साहित्य में लोकप्रिय हुए। पंजाबी के लोक नृत्य भंगड़ा और गिद्दा से प्रेरित गीत हिंदी कविता और नाटकों में आए जिससे हिंदी को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों तक पहुंचने में सहायता मिली। भक्ति आंदोलन में क्षेत्रीय कवियों ने हिंदी को एक शक्तिशाली माध्यम बनाया। बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु और मलयालम के बहुत सारे साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ जैसे रवींद्रनाथ टैगोर की गीतांजलि, प्रेमचंद की कहानियों का मराठी में अनुवाद और तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती की रचनाओं का हिंदी में रूपांतरण इसके उदाहरण हैं जिससे हिंदी की प्रगति को बल मिला।

क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी के शब्दकोश, व्याकरण और उच्चारण को समृद्ध किया जिससे हिंदी और अधिक समावेशी और जीवंत भाषा के रूप में विश्व पटल पर उभरी, क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में बहुत से शब्द सम्मिलित हुए जैसे मराठी: "सह्याद्रि" (पहाड़), "सामना" (मुकाबला), तमिल: "कावेरी" (नदी), "पोंगल" (त्योहार), बंगाली: "सुंदरबन" (जंगल), "रसगुल्ला" (मिठाई) और पंजाबी: "लस्सी" (पेय), "गुरुद्वारा" (पूजा स्थल) आदि। ये शब्द हिंदी को और अधिक अर्थपूर्ण और विविध बनाते हैं। भोजपुरी, अवधी, और ब्रज जैसी बोलियां हिंदी की क्षेत्रीय शैलियों के रूप में विकसित हुईं। ये बोलियां हिंदी को स्थानीय समुदायों के लिए अधिक सुलभ बनाती हैं। जैसे भोजपुरी प्रभावित हिंदी का उपयोग उत्तर प्रदेश और बिहार में व्यापक है जबकि अवधी प्रभावित हिंदी अयोध्या और लखनऊ में प्रचलित है। क्षेत्रीय भाषाओं की बोलचाल की शैली ने हिंदी को सरल और सहज बनाया। क्षेत्रीय भाषाओं के मुहावरों और लोकोक्तियों ने हिंदी को अधिक रंगीन और जीवंत बनाया। जैसे, "आम के आम, गुठलियों के दाम" (हिंदी में राजस्थानी

प्रभाव)। क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी को शिक्षा और प्रशासन में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में, क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिंदी को पढ़ाने की पद्धति ने हिंदी को स्वीकार्य बनाया। दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु, या कन्नड़ के साथ हिंदी को त्रिभाषी सूत्र के तहत पढ़ाया जाता है। क्षेत्रीय भाषाओं के शिक्षक हिंदी को स्थानीय संदर्भ में समझाते हैं, जिससे छात्रों को इसे सीखने में आसानी होती है। क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों जैसे चेन्नई का मद्रास विश्वविद्यालय और कोलकाता का जादवपुर विश्वविद्यालय ने हिंदी साहित्य और भाषा के अध्ययन को बढ़ावा दिया।

जैसे पोंगल (तमिलनाडु), बैसाखी (पंजाब), और दुर्गा पूजा (बंगाल) हिंदी के माध्यम से देशभर में प्रचारित हुए। हिंदी मीडिया और साहित्य ने इन उत्सवों को राष्ट्रीय पहचान दी। हिंदी टीवी चैनलों और डीडी नेशनल द्वारा क्षेत्रीय संस्कृति को हिंदी में प्रसारित किया जा रहा है, डीडी बंगला और डीडी मराठी पर हिंदी में क्षेत्रीय सामग्री प्रसारित की जाती है।

आधुनिक युग में डिजिटल और तकनीकी प्रगति ने हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच सहयोग को नई दिशा दी है। यूट्यूब, नेटफ्लिक्स, और अमेजन प्राइम जैसे मंचों पर क्षेत्रीय भाषाओं की सामग्री हिंदी डबिंग के साथ उपलब्ध है। क्षेत्रीय ब्लॉगर्स

राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत, हिंदी को केंद्र सरकार के कार्यों में लागू किया गया। क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिंदी का उपयोग सरकारी दस्तावेजों और पत्राचार में किया जाता है। क्षेत्रीय भाषी कर्मचारी हिंदी को प्रशासनिक भाषा के रूप में अपनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। मराठी, गुजराती और पंजाबी भाषी कार्मिक हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, जिससे कार्यालयों में हिंदी की प्रगति हो रही है। क्षेत्रीय भाषाएं और हिंदी मिलकर भारत की सांस्कृतिक एकता को सशक्त करती हैं। यह योगदान विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है जैसे बॉलीवुड, जो हिंदी सिनेमा का केंद्र है, क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को अपनाता है। पंजाबी गीत, भोजपुरी संवाद, और तमिल नृत्य शैलियां हिंदी फिल्मों में नियमित रूप से शामिल होती हैं। क्षेत्रीय सिनेमा का हिंदी में रीमेक बनाया जाता है। जैसे तमिल फिल्म 'काला' का हिंदी रीमेक 'कबाली' और मलयालम फिल्म दृश्यम का हिंदी संस्करण हिंदी दर्शकों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। क्षेत्रीय लोक नृत्य जैसे गरबा (गुजराती), लावणी (मराठी), और भंगड़ा (पंजाबी) हिंदी गीतों के साथ राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किए जाते हैं। क्षेत्रीय त्योहार

और कंटेंट क्रिएटर्स हिंदी में सामग्री बनाते हैं जिससे हिंदी का दायरा बढ़ता है। क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिंदी में सॉफ्टवेयर और मोबाइल एप्स विकसित किए गए। क्षेत्रीय भाषी उपयोगकर्ताओं के लिए हिंदी की-बोर्ड और वॉयस टाइपिंग की सुविधा ने हिंदी को डिजिटल रूप से सुलभ बनाया। ट्विटर, फेसबुक, और व्हाट्सएप पर क्षेत्रीय भाषी लोग हिंदी में पोस्ट करते हैं, जिससे हिंदी सोशल मीडिया की भाषा बन रही है।

राजभाषा हिंदी की प्रगति में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान एक समृद्ध और समावेशी प्रक्रिया रही है। ऐतिहासिक रूप से क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी को साहित्य, भाषा, शिक्षा, संस्कृति, और डिजिटल क्षेत्र में मजबूत किया है। साहित्यिक आदान-प्रदान, भाषाई समृद्धि, और सांस्कृतिक एकीकरण के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी को भारत की एकता का प्रतीक बनाया। चुनौतियों के बावजूद हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच सहयोग भारत की बहुभाषी पहचान को और सशक्त करेगा। भविष्य में इस सहयोग को नवाचार और नीतिगत समर्थन के साथ और गहरा किया जा सकता है ताकि हिंदी विश्व मंच पर भारत की आवाज बन सके।

चंद्रमा पर भारतोदय: विश्व को चमत्कृत करने वाली उपलब्धि

डॉ. लाखा राम

चंद्रमा, मानव जीवन के लिए सदैव एक रहस्यमय खगोलीय पिंड रहा है। यह रहस्य कभी-कभी खटकता है। धरती मां का भाई, चंद्रमा को भारतीयों ने सदैव 'चंदामामा' माना है। चंद्रमा के साथ ऐसा भावनात्मक संबंध शायद ही भारतीय सभ्यता के अलावा किसी का रहा हो। यह चंद्रमा पर भारतोदय है। इस सफलता के बाद भारत आज स्पेस टेक्नोलाजी में दुनिया के ताकतवर देशों के साथ खड़ा है। भारतीयों की आस्था व साहित्य के तमाम प्रतीक-प्रतिमानों में गहरे तक ऊंचा स्थान रखने वाले चंद्रमा पर भारतीय मेधा की दस्तक विषमयकारी है। प्रधानमंत्री जी ने भी कहा है कि 'अब चंदा मामा दूर के नहीं, बस एक टूर के हैं, जब हम आंखों के सामने इतिहास बनता देखते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है।'

चंद्रमा पर पहुंचने के लिए दुनिया के तमाम देशों के बीच जारी होड़ के नजरिए से भी चंद्रयान-3 मिशन भारत के लिए काफी मायने रखता है। चंद्रयान-3 इसरो का पहला ऐसा मिशन है, जिसमें किसी दूसरे ग्रह की जमीन पर अपना यान उतारा। भारत ने 14 जुलाई 2023 को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से एल.वी.एम.3-एम.4 राकेट के जरिए करीब 4400 किलोग्राम के अपने तीसरे चन्द्र मिशन चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण किया। इस अभियान के तहत चांद की सतह पर एक बार फिर 'साफ्ट लैंडिंग' का प्रयास किया गया। पंद्रह साल में इसरो का यह तीसरा चंद्रमिशन है। चंद्रयान-2 मिशन के दौरान अंतिम क्षणों में लैंडर 'विक्रम' पथ विचलन के कारण 'साफ्ट लैंडिंग' कराने में सफल नहीं हुआ था। सफल प्रक्षेपण के बाद चंद्रयान-3 को 3.84 लाख किलोमीटर की यात्रा पूरी करने में करीब 41 दिन लगे। इस दौरान इसने पृथ्वी के पांच चक्कर लगाए। 23 अगस्त 2023 को शाम 6.04 बजे चंद्रयान-3 के लैंडर 'विक्रम' ने चंद्रमा की सतह पर कदम रखा। इसी के साथ ही चंद्रमा के दुरूह और अभेद्य दक्षिण ध्रुव पर पहुंचने वाला दुनिया का पहला देश बनकर इतिहास रच दिया। 615 करोड़ रूपए की लागत के इस अभियान की कामयाबी के साथ भारत चंद्रमा पर साफ्ट लैंडिंग में कामयाब होने वाला चौथा देश बन गया। चंद्रमा की सतह पर अपने यान उतारने में अभी तक अमेरिका, रूस और चीन कामयाब हुए हैं। यह कामयाबी भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए विशाल छलांग और अंतरिक्ष अभियानों के लिए मील का पत्थर है। चंद्रयान-3 की खासियत यह है कि यह पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से अपने दम पर तैयार किया गया है। इसमें सैटेलाइट भी हमारा है, राकेट भी हमारा है और नेविगेशन सॉफ्टवेयर भी हमारा है। स्वदेशी एलवी मार्क तीन राकेट ने इसे अंतरिक्ष में पहुंचाया। इसके तीन भाग हैं- लैंडर, आर्बिटर और रोवर। रोवर में 'प्रज्ञान' बेहद महत्वपूर्ण है। सारे वैज्ञानिक उपकरण हमारे अपने देश में विकसित किए गए हैं। यह भारत के लिए बहुत गर्व की बात है।

चंद्रयान-2 की कड़वी यादों से सबक लेकर चंद्रयान मिशन की कामयाबी ने अंतरिक्ष अध्ययन में एक नया कीर्तिमान/नई इबारत लिखी है। दुनियाभर में भारत की कामयाबी की चर्चा है। आज भारत संपूर्ण विश्व में एक वैज्ञानिक शक्ति केंद्र के रूप में उभर रहा है। इसका असर विज्ञान ही नहीं, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था और छवि पर भी पड़ेगा। देशों की ताकत केवल अर्थव्यवस्था, व्यापार और सामरिक शक्ति से नहीं आंकी जाती, उसकी वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियां भी इसका मानक होती हैं। भारत इस दिशा में कामयाबी हासिल कर रहा है। चंद्रयान-3 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो (ISRO) और उसके वैज्ञानिकों के साथ-साथ देशवासियों के लिए गर्व का एक और अविस्मरणीय क्षण है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा, यूरोपियन स्पेस एजेंसी, इंग्लैंड और फ्रांस ने भी सफल प्रक्षेपण पर भारतीय वैज्ञानिकों की पीठ थपथपाई है। पाकिस्तान ने भी चंद्रयान-

3 के सफल प्रक्षेपण के लिए भारतीय स्पेस संस्थान इसरो को शुभकामनाएं दी हैं। चीन के सरकारी अखबार 'ग्लोबल टाइम्स' ने भी भारत और इसरो को बधाई दी है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि '14 जुलाई की तारीख भारतीय अंतरिक्ष अभियान के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाएगी। चंद्रयान-3 ने नया अध्याय लिखा है। यह उपलब्धि हमारे वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों का परिणाम है। मैं उनकी ललक और प्रतिभा को प्रणाम करता हूं।'

चांद के दक्षिण ध्रुव पर यान भेजने का उद्देश्य इसलिए अहम है क्योंकि यह स्थल दुनिया के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए अब तक रहस्यमय बना हुआ है। वहां की चट्टानें 10 लाख साल से भी ज्यादा पुरानी बताई गई हैं। इतनी प्राचीन चट्टानों के अध्ययन से ब्रहमांड की उत्पत्ति को समझने में मदद मिल सकती है। अभी तक किसी भी देश का चंद्रयान चंद्रमा के उस दक्षिणी छोर पर नहीं पहुंच सका है, जहां अंधेरा रहता है और जहां के रहस्य अबूझ हैं। माना जाता है कि वहां बर्फ के भंडार के साथ खनिज भी हैं। वहां का तापमान माइनस 248 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि चांद के दक्षिण ध्रुव पर पानी के स्थाई स्रोत होने की संभावनाएं अधिक हैं। वहां की सतह में पानी और खनिजों की खोज करेगा। चंद्रमा पर हीलियम की खोज करके उससे पृथ्वी पर फ्यूजन पद्धति से ऊर्जा की समस्या का हल करने की परिकल्पना वैज्ञानिकों के दिमाग में है। चांद के दक्षिण छोर पर चंद्रयान-3 के पहुंचने से न केवल चंद्रमा के बारे में अनेक नई जानकारियां मिलेंगी, बल्कि अंतरिक्ष अभियानों को कहीं अधिक सुविधाजनक तरीके से संचालित करने में मदद भी मिलेगी।

पहले चंद्रयान को 22 अक्तूबर 2008 को आंध्रप्रदेश में स्थित श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पीएसएलवीसी-11 द्वारा लॉन्च किया गया था, जिसका उद्देश्य चंद्रमा की सतह का मानचित्रण करना था। भारत द्वारा चंद्रयान-1 द्वारा चांद पर पहली बार पानी की खोज की गई। फिर चंद्रयान-1 अपेक्षित रूप से सफल नहीं रहा, लेकिन इसके बाद चंद्रमा फिर से अंतरिक्ष कार्यक्रमों का आकर्षण बन गया है। जुलाई 2019 में चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण भी इसी के जरिए किया गया था, लेकिन उसका लैंडर चंद्रमा की सतह से महज 2.1 किलोमीटर की दूरी पर जाकर भटक गया और यह अभियान ध्वस्त हो गया था। चंद्रयान-2 की विफलता पर प्रधानमंत्री ने यह कहकर सभी का हौसला बढ़ाया था कि वयम् अमृतस्य पुत्राः। हमें सबक लेना है, पीछे मुड़कर नहीं देखना है और ऐसा हुआ भी। चंद्रयान-प्रथम के लगभग 11 साल बाद चंद्रयान-2 संभव हुआ था और उसके लगभग 4 साल बाद चंद्रयान-3 का मौका आया। इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ ने प्रक्षेपण के बाद कहा कि अब सबसे बड़ी चुनौती चंद्रमा की सतह पर साफ्ट लैंडिंग करना है। 'चंद्रयान-1' ने जो डाटा उपलब्ध कराया था, उससे चंद्रमा पर जल के साक्ष्य मिले थे। 'चंद्रयान-3' का सफर उससे कहीं आगे का है। यदि लैंडर 'विक्रम' और रोवर 'प्रज्ञान' अपने मिशन में सफल रहे तो चंद्रयान-3 चांद की समूची सतह, पानी के व्यापक कणों, चांद की मिट्टी और रासायनिक तत्वों, रोशनी और रेडिएशन आदि का सम्यक अध्ययन कर सकेगा। उससे संभव होगा कि चांद पर इंसानी जिंदगी बसाई जा सकती है अथवा नहीं।

इसरो में वैज्ञानिकों से मुलाकात के दौरान प्रधानमंत्री ने 26 अगस्त 2023 को यह ऐलान किया कि चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 के लैंडर ने जहां पहला कदम रखा, उस जगह को

'शिवशक्ति पॉइंट' के नाम से जाना जाए। 23 अगस्त को 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' मनाया जाए। इसी दिन चंद्रयान-3 चांद पर उतरा था। यही नहीं चार साल पहले चंद्रयान-2 जहां क्रैश हुआ था, उस जगह को भी 'तिरंगा प्वाइंट' के नाम से जाना जाए और उन्होंने 'जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान के साथ जय अनुसंधान' का नारा जोड़ा। 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के जरिए भारत सरकार ने भारत के अंतरिक्ष मिशनों की उल्लेखनीय उपलब्धियों को उजागर करने और देश के युवाओं को प्रेरित करने के लिए एक महीने का अभियान शुरू किया। इसका विषय था- 'चांद को छूते हुए जीवन को छूनाः भारत की अंतरिक्ष गाथा'।

अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम दुनिया की नजर में अजूबा है। भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियां दुनिया को चौंकाने वाली साबित हो रही हैं। इसरो को तीसरे प्रयास में कामयाबी मिली है। इस सफलता ने इसरो के हौसले बुलंद किए हैं, देशवासियों को गर्व से भर दिया है। भारत के चंद्रयान मिशन ने स्पेस डिप्लोमेसी में भारत का कद बढ़ा दिया है। चांद पर विक्रम की लैंडिंग भले ही सॉफ्ट पावर मालूम होती है, पर वास्तव में वह हार्डपावर का प्रदर्शन है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रतिष्ठा का बड़ा महत्व होता है। कभी इस क्षेत्र में नया माने जाने वाला भारत चंद्रयान की आरंभिक सफलता के बाद अब सूर्य के पास पहुंचने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। चंद्रयान-3 की सफलता के बाद अब भारत की निगाह सूर्य, शुक्र और मंगल ग्रह के अभियानों पर है। सूर्य के विस्तृत अध्ययन के लिए 2 सितंबर 2023 को इसरो ने देश का पहला सूर्य मिशन आदित्य एल-1 भेज दिया है। गगनयान, चंद्रयान-4 पर भी तैयारी जारी है। आदित्य एल-1 धरती से पंद्रह लाख किलोमीटर की दूरी पर सूर्य के रहस्यों को खोजने का प्रयास करेगा। आदित्य एल-1 की तैनाती उस जगह की गई है, जहां से सूर्य हर समय नजर आएगा। आदित्य का परीक्षण भारत के इरादों और उसकी कड़ी मेहनत को प्रमाणित करता है।

चंद्रमा के सबसे मुश्किल इलाके दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान की कुशलतापूर्वक कराई गई सॉफ्ट लैंडिंग इसकी गवाह है कि दृढ़ इरादे, सूझबूझ और अतीत से सबक लेकर बरती गई सावधानियों के बल पर बड़े से बड़े वैज्ञानिक पराक्रम किए जा सकते हैं। यह एक ऐसी शानदार उपलब्धि है जो सचमुच स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। प्रधानमंत्री जी ने इसे अविस्मरणीय और अभूतपूर्व बताते हुए कहा कि यह विकसित भारत का शंखनाद है। नए भारत के जयघोष का पल है। यह क्षण मुश्किलों के महासागर को पार करने का है। यह क्षण जीत के चंद्रपथ पर चलने का है। यह क्षण भारत की 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। यह क्षण भारत में नई ऊर्जा, नए विश्वास, नई चेतना का है। भारत की यह उड़ान चंद्रयान से भी आगे जाएगी। सरकार को रिसर्च और तकनीकी पर जोर देना होगा। अगले मिशन आदित्य एल, गगनयान, शुक्रयान, चंद्रयान-4 और स्पेस मिशन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और हर संभव मदद देनी चाहिए। चंद्रयान-4 मिशन में चंद्रमा की मिट्टी के नमूने पृथ्वी पर लाए जाएंगे, वहीं गगनयान मिशन में इंसान को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। इसरो के लिए इस मिशन का सफल होना बहुत जरूरी था, क्योंकि इसका उपयोग उपग्रहों की सर्विसिंग, अंतरिक्ष स्टेशन संचालन और ग्रहों के बीच आपस में चल रहे मिशनों में खूब होता है। भारत की यह सफलता अंतरिक्ष में छिपे कई रहस्यों और जानकारियों के उद्घाटन में बहुत काम आएगी।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रमों ने जहां रूस, अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ कई संयुक्त मिशनों में सहयोग किया है, तो दूसरी ओर सार्क और विकासशील देशों को उपग्रह प्रक्षेपण और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भी मदद प्रदान की। यही कारण है कि इसरो की विश्वसनीयता और वैश्विक नेतृत्व का लोहा माना जा रहा है। इसका श्रेय इसरो की तकनीकी क्षमता और किफायती माडल को जाता है। इसकी परियोजनाएं समय और लागत में कुशलता का एक अनुपम उदाहरण हैं। इस प्रकार सीमित संसाधनों से शुरू हुई 'भारत की अंतरिक्ष गाथा' आज दुनिया को नई ऊंचाइयों की ओर प्रेरित करती है। यह गाथा भारत की विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार और आत्मनिर्भरता की यात्रा को भी प्रदर्शित करती है।

सोशल मीडिया: आज का युग और चुनौतियां

कमल

प्रस्तावना: आज जब पूरी दुनिया तेजी से डिजिटल युग की ओर बढ़ रही है, सोशल मीडिया ने हमारे जीवन को नए रूप में गढ़ा है। यह अब केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, जनभागीदारी, सामाजिक चेतना और लोकतांत्रिक संवाद का प्रमुख स्तंभ बन चुका है।

जिस तरह से समाज के हर वर्ग में इसकी पहुंच है, वह इस माध्यम की शक्ति को सिद्ध करता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन चुका है जहां ग्रामीण भारत से लेकर महानगरों तक, हर व्यक्ति अपनी बात कह सकता है और विश्व भर से जुड़ सकता है। इस लेख में हम सोशल मीडिया के विस्तार, प्रभाव, संभावनाओं और उससे जुड़ी चुनौतियों का व्यापक विश्लेषण करेंगे।

सोशल मीडिया का विकास और भारत में प्रसार: सोशल मीडिया की शुरुआत विश्व में 1990 के दशक के अंत में हुई थी। भारत में इसका व्यापक प्रभाव 2010 के बाद देखने को मिला, जब स्मार्टफोन, सस्ते डेटा प्लान और "डिजिटल इंडिया" जैसी पहलों ने इंटरनेट को जन-जन तक पहुंचाया।

आज भारत में लगभग 85 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जिनमें से अधिकांश सोशल मीडिया का नियमित उपयोग करते हैं। फेसबुक (Facebook), व्हाटसएप (WhatsApp), इंस्टाग्राम (Instagram), एक्स (X) (पूर्व ट्विटर (Twitter)), यूट्यूब (YouTube), टेलीग्राम (Telegram) और लिंक्डइन (LinkedIn) जैसे प्लेटफॉर्म हमारे जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी सोशल मीडिया की पहुंच तेजी से बढ़ रही है।

सकारात्मक पहलू

1. **सूचना तक त्वरित पहुंच:** सोशल मीडिया ने सूचना को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब अखबार या टीवी की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती, बल्कि कुछ ही सेकंड में देश-दुनिया की जानकारी मोबाइल स्क्रीन पर उपलब्ध हो जाती है। इससे आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाओं, सरकारी योजनाओं और चुनावों से जुड़ी जानकारी त्वरित रूप से लोगों तक पहुंच रही है।
2. **शिक्षा और कौशल विकास में योगदान:** यूट्यूब, टेलीग्राम, व्हाटसएप स्टडी ग्रुप्स, इंस्टाग्राम लाइव जैसे माध्यमों से शिक्षक और विशेषज्ञ लाखों छात्रों तक पहुंच रहे हैं।
   डिजिटल शिक्षा को सुलभ और सस्ता बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। इससे स्किल डेवलपमेंट, ऑनलाइन कोर्स और सर्टिफिकेशन भी बढ़े हैं।
3. **युवाओं के लिए करियर के नए विकल्प:** सोशल मीडिया ने कंटेंट क्रिएटर, इन्फ्लुएंसर, फ्रीलांसर, डिजिटल मार्केटर जैसे करियर विकल्प खोल दिए हैं। लाखों युवा अब ब्लॉगिंग, वीडियोज़, शॉर्ट्स और ऑनलाइन कोचिंग के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रहे हैं।
4. **सामाजिक आंदोलनों को गति:** #MeToo, #Justice For..., # SaveTheEarth जैसे अभियानों ने यह दिखाया है कि सोशल मीडिया जनचेतना फैलाने और सरकारों को जवाबदेह बनाने का सशक्त मंच है।
5. **आपातकालीन स्थिति में सहायता:** कोविड-19 महामारी, बाढ़ या अन्य आपदाओं के समय सोशल मीडिया के जरिए तत्काल जानकारी और सहायता की व्यवस्था संभव हुई। रक्तदान, हॉस्पिटल बेड्स, ऑक्सीजन और जरूरी संसाधनों को जुटाने में यह बहुत उपयोगी साबित हुआ।

नकारात्मक पहलू और चुनौतियां

1. **फेक न्यूज का खतरा:** गलत सूचना का प्रसार सोशल मीडिया की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। बिना पुष्टि के फैलाई गई खबरें धार्मिक तनाव, दंगे और सामाजिक विघटन का कारण बन सकती हैं।
2. **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** 'लाइक्स' और 'फॉलोवर्स' की तुलना, ट्रोलिंग, और सोशल मीडिया एडिक्शन से तनाव, अवसाद, अनिद्रा और आत्महत्या

जैसे मामले सामने आ रहे हैं। किशोर विशेष रूप से इसकी चपेट में हैं।

3. **साइबर अपराध और निजता का संकट:** फिशिंग, ओटीपी (OTP) फ्रॉड, पहचान की चोरी, ऑनलाइन हैकिंग और अश्लीलता जैसे अपराध बढ़ते जा रहे हैं। व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग का खतरा भी बना रहता है। डेटा प्राइवेसी पर चिंता लगातार गहराती जा रही है।
4. **ट्रोलिंग और भाषाई हिंसा:** राजनीतिक विचारधाराओं के टकराव और ध्रुवीकरण के चलते ट्रोल आर्मी, गाली-गलौज और नफरत भरे मैसेज सामान्य हो गए हैं। यह संवाद को नष्ट करता है और वैचारिक विविधता को खत्म करने की कोशिश करता है।

सोशल मीडिया के अन्य सामाजिक प्रभाव

1. **सांस्कृतिक प्रभाव:** सोशल मीडिया पर पाश्चात्य संस्कृति का व्यापक प्रचार होता है। जहां यह विविध संस्कृतियों को जानने का अवसर देता है, वहीं युवाओं में पारंपरिक भारतीय मूल्यों से दूरी भी पैदा कर रहा है।
2. **राजनीतिक प्रभाव और जनमत निर्माण:** राजनीतिक दल सोशल मीडिया का उपयोग प्रचार और जनसमर्थन के लिए कर रहे हैं। हालांकि यह राजनीतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है, पर गलत सूचनाओं और नफरत फैलाने वाली रणनीतियों से लोकतांत्रिक मूल्यों को खतरा भी है।
3. **पारिवारिक और सामाजिक संबंधों पर प्रभाव:** वास्तविक दुनिया में संवाद की जगह वर्चुअल दुनिया ने ले ली है। परिवारों में आपसी बातचीत घट रही है और भावनात्मक दूरी बढ़ रही है।
4. **किशोरों और बच्चों पर प्रभाव:** बच्चे सोशल मीडिया के प्रभाव में रहकर कई बार अनुचित सामग्री, ऑनलाइन गेमिंग एडिक्शन, और साइबर बुलिंग का शिकार बनते हैं। यह उनके मानसिक विकास और व्यवहार को प्रभावित करता है।

सरकारी प्रयास और कानून: भारत सरकार ने सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए कई पहल की हैं:

- **आईटी नियम 2021:** सोशल मीडिया कंपनियों को जवाबदेह बनाया गया है।
- **CERT-In और I4सी:** साइबर सुरक्षा के लिए स्थापित संस्थाएं।
- **1930 साइबर हेल्पलाइन:** साइबर अपराध की त्वरित रिपोर्टिंग के लिए।
- PMGDISHA: डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम।

समाज की भूमिका और हमारी जिम्मेदारी: सोशल मीडिया को सकारात्मक रूप से अपनाने के लिए हमें चाहिए कि:

- जानकारी साझा करने से पहले उसकी पुष्टि करें।
- अफवाहों से बचें और उन्हें फैलने से रोकें।
- बच्चों को डिजिटल सुरक्षा और मर्यादा का पाठ पढ़ाएं।
- स्वयं भी संयम और विवेक के साथ सोशल मीडिया का प्रयोग करें।
- इसे ज्ञान, जागरूकता और सामाजिक सेवा का माध्यम बनाएं।

उपसंहार: सोशल मीडिया एक शक्तिशाली उपकरण है। यह समाज को जोड़ने, विचारों को साझा करने और व्यक्तित्व को विकसित करने का अवसर देता है। लेकिन यदि इसका दुरुपयोग हो, तो यह समाज को बांट सकता है, भ्रम फैला सकता है और मानसिक अशांति का कारण बन सकता है।

इसलिए हमें सोशल मीडिया का उपयोग संयम, विवेक और जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए। इसका सही उपयोग न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देगा, बल्कि देश को भी एक जागरूक, सक्षम और डिजिटल राष्ट्र बनने की दिशा में ले जाएगा।

जनसंख्या में गिरावट और वृद्धावस्था के आर्थिक निहितार्थ: उत्पादकता और विकास के लिए चुनौतियां

अम्बुज कुमार

जनसंख्या परिवर्तन 21वीं सदी में वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की दिशा और दशा पर प्रभाव रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण शक्तियों में से एक है। अनेक देश, खासतौर से यूरोप, पूर्वी एशिया और उत्तरी अमेरिका के देशों में जन्म दर में गिरावट और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि का दोहरा रुझान देखा जा रहा है। ये रुझान बुजुर्ग नागरिकों के उच्च अनुपात और जनसंख्या में कमी की ओर है। यह जन-सांख्यिकीय परिवर्तन आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों को जन्म देता है। इनमें मुख्य चुनौतियां हैं -आर्थिक विकास के लक्ष्य की प्राप्ति, श्रम उत्पादकता और सार्वजनिक प्रणालियों की स्थिरता पर प्रभाव।

जनसंख्या में गिरावट का आर्थिक प्रभाव सिकुड़ता कार्यबल

जैसे-जैसे जनसंख्या वृद्धि दर घटती है, वैसे-वैसे जनसंख्या में कार्यशील वर्ग का मिश्रण और आकार भी घटता है। कार्यशील जनसंख्या की कमी आर्थिक उत्पादन को बाधित करती है और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि को धीमा कर सकती है। कामकाजी लोगों की कमी इन पर निर्भर लोगों की संख्या को बढ़ाती है जो सामाजिक प्रणालियों और पारिवारिक वित्त पर दबाव डालती है।

कम खपत और मांग

जनसंख्या की कमी उपभोक्ताओं की कमी होती है जिससे अर्थव्यवस्था में समग्र मांग में कमी आती है। इसका असर अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पहलु जैसे- आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा प्रणालियों तथा वाणिज्य व व्यापार पर पड़ता है। व्यवसायों को विस्तार के अवसरों की कमी होती है, और देशों में धीमी आर्थिक गतिशीलता का अनुभव हो सकता है।

वृद्ध जनसंख्या और उत्पादकता

वृद्ध कार्यबल अक्सर अनुभव और संस्थागत ज्ञान लेकर आते हैं। हालांकि, वृद्धावस्था के परिणामस्वरूप शारीरिक प्रदर्शन धीमा हो सकता है और नई तकनीकों के प्रति अनुकूलन क्षमता कम हो सकती

है। संज्ञानात्मक गिरावट और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं वृद्ध कर्मचारियों की उत्पादकता की क्षमता को प्रभावित करती हैं। निर्माण, विनिर्माण और स्वास्थ्य सेवा जैसे उद्योग वृद्ध कार्यबल से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। उच्च तकनीक क्षेत्रों में, युवा, अधिक डिजिटल रूप से कुशल श्रमिकों के अनुपात में कमी आने के कारण नवाचार धीमा हो सकता है।

राजकोषीय और सामाजिक दबाव

वृद्ध होती आबादी के कारण पेंशन और स्वास्थ्य सेवाओं की मांग बढ़ती है। सामाजिक बीमा प्रणालियों में कम

श्रमिकों के भुगतान के कारण, सरकारों को बजटीय कमी का सामना करना पड़ सकता है, जिसके लिए सेवानिवृत्ति की आयु बढ़ाने, करों में वृद्धि करने या लाभों को कम करने जैसे सुधारों की आवश्यकता हो सकती है। वृद्धों को न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक और वित्तीय स्वास्थ्य के लिए भी उचित देखभाल की आवश्यकता होती है। अंतर-पीढ़ीगत असमानता सामाजिक ताने-बाने के लिए भी लाभकारी नहीं है। इससे पीढ़ियों के बीच मानसिक असामंजस्य पैदा होता है, जहां एक आयु समूह अपनी विभिन्न आवश्यकताओं के लिए दूसरे समूह के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता।

इसके शमन के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियों में निम्न पर विचार किया जा सकता है।

श्रम बल भागीदारी को बढ़ावा देना

महिलाओं, वृद्ध श्रमिकों और कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के बीच अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने से श्रम की कमी को दूर करने में मदद मिल सकती है। लचीली कार्य परिस्थितियां, पुनः प्रशिक्षण कार्यक्रम और देखभाल करने वालों के लिए सहायता जैसी नीतियां महत्वपूर्ण हैं।

परिवार और प्रजनन नीतियां

जन्म दर को प्रतिस्थापन स्तर पर रखने के लिए सरकारें माता-पिता की छुट्टी, बच्चों के भत्ते, बच्चे की किफायती देखभाल (चाइल्डकेयर) और आवास सहायता जैसे प्रोत्साहन पेश कर रही हैं। हालांकि इन नीतियों के प्रभाव दिखने में दशकों लग सकते हैं, लेकिन ये दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय संतुलन के लिए आवश्यक हैं।

आप्रवासन

कई देश अपने श्रम बल को बढ़ाने के लिए आप्रवासन की ओर रुख कर रहे हैं। लेकिन, आप्रवासन में आत्मसातीकरण की समस्या है। हालांकि, सफल एकीकरण के लिए शिक्षा, भाषा प्रशिक्षण, सांस्कृतिक जागरूकता और भेदभाव-विरोधी नीतियों के इर्द-गिर्द मज़बूत नीतिगत ढांचे की आवश्यकता होती है।

तकनीकी नवाचार और स्वचालन

एआई (AI) और रोबोटिक्स, सिकुड़ते कार्यबल के कारण उत्पादकता में होने वाली कमी के लिए आशाजनक समाधान पेश करते हैं। स्वचालन श्रम-प्रधान क्षेत्रों में अंतराल को भर सकता है और कम मानव श्रमिकों के साथ भी आर्थिक उत्पादन को बनाए रख सकता है।

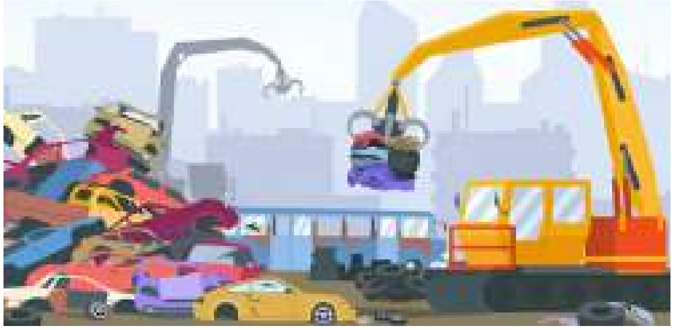

देशभर को बांधने के लिए भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिंदी की जरूरत है।

- जवाहर लाल नेहरू

पर्यावरण की महत्ता

धरमवीर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(सेवानिवृत्त)

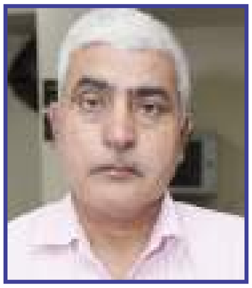

पर्यावरण वह आधार है जिस पर जीवन का समस्त चक्र टिका हुआ है। यह न केवल मानव जीवन, बल्कि पृथ्वी पर विद्यमान सभी जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों और सूक्ष्मजीवों के लिए आवश्यक है। पर्यावरण में वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति, और जैव-विविधता जैसे तत्व शामिल हैं, जो एक-दूसरे के साथ संतुलन बनाए रखते हैं। आज के युग में, जब औद्योगीकरण, शहरीकरण और मानवीय गतिविधियों ने पर्यावरण को गंभीर खतरे में डाल दिया है, तब इसकी महत्ता को समझना और इसके संरक्षण के लिए कदम उठाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। पर्यावरण वह प्राकृतिक व्यवस्था है जो जीवन को संभव बनाती है। स्वच्छ हवा, शुद्ध जल, उपजाऊ मिट्टी और जैव-विविधता के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव है। ऑक्सीजन, जो जीवन के लिए अनिवार्य है, हमें वृक्षों और वनस्पतियों से प्राप्त होती है। जल, जो हमारे शरीर का प्रमुख हिस्सा है, नदियों, झीलों और भूजल से मिलता है। इसी प्रकार, मिट्टी हमें भोजन

प्रदान करती है। ये सभी तत्व पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं।

पर्यावरण पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखता है। विभिन्न प्रजातियों के बीच खाद्य श्रृंखला और जैविक चक्र पर्यावरण के संतुलन पर निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए, पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। कीट-पतंगे और पक्षी परागण और बीज फैलाने में सहायता करते हैं, जो कृषि और वनस्पति के लिए महत्वपूर्ण है। यदि इस संतुलन में कोई गड़बड़ी होती है, तो इसका प्रभाव समस्त पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है। स्वच्छ पर्यावरण मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदूषित हवा, दूषित जल और अस्वच्छ वातावरण विभिन्न बीमारियों जैसे अस्थमा, कैंसर, और जलजनित रोगों का कारण बनते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण हर साल लाखों लोग असमय मृत्यु का शिकार होते हैं। इसके विपरीत, स्वच्छ और हरा-भरा पर्यावरण मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

पर्यावरण का आर्थिक महत्व भी कम नहीं है। वन, नदियां और समुद्र न केवल प्राकृतिक संसाधन प्रदान करते हैं, बल्कि पर्यटन और अन्य उद्योगों को भी बढ़ावा देते हैं। कृषि, मत्स्य पालन, और वन उत्पाद जैसे क्षेत्र पर्यावरण पर निर्भर हैं। इसके अलावा, स्वच्छ ऊर्जा स्रोत जैसे सौर और पवन ऊर्जा पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक विकास में भी योगदान देते हैं। भारत जैसे देश में, जहां प्रकृति को देवी-देवताओं के रूप में पूजा जाता है, पर्यावरण का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व अत्यधिक है। नदियां जैसे गंगा और यमुना, पर्वत जैसे हिमालय, और वृक्ष जैसे पीपल और बरगद को पवित्र माना जाता है। ये तत्व न केवल हमारी संस्कृति का हिस्सा हैं, बल्कि हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित भी करते हैं।

आज पर्यावरण कई चुनौतियों का सामना कर रहा है,

जैसे वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और जैव-विविधता का ह्रास। ये समस्याएं मानवीय गतिविधियों, जैसे औद्योगीकरण, अनियोजित शहरीकरण, और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन का परिणाम हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए पर्यावरण संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण बाढ़, सूखा, और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम किया जा सकता है। प्रजातियों का विलुप्त होना पारिस्थितिकी तंत्र को कमजोर करता है। वन्यजीव अभ्यारण्यों और संरक्षित क्षेत्रों के माध्यम से जैव-विविधता को बचाया जा सकता है। अंधाधुंध खनन और संसाधनों के उपयोग से पृथ्वी की क्षमता कम हो रही है। पर्यावरण संरक्षण के द्वारा इन संसाधनों का टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। स्वच्छ पर्यावरण बीमारियों को कम करता है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाता है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत, सामुदायिक और सरकारी स्तर पर कदम उठाए जा सकते हैं:

1. वृक्षारोपण: पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना पर्यावरण संरक्षण का सबसे सरल और प्रभावी तरीका है।

2. प्रदूषण नियंत्रण: वाहनों और उद्योगों से होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए स्वच्छ ईंधन और तकनीकों का उपयोग करना चाहिए।

3. पुनर्चक्रण और अपशिष्ट प्रबंधन: कचरे को कम करने, पुनर्चक्रण करने और जैविक खाद बनाने से पर्यावरण पर बोझ कम होता है।

4. जल संरक्षण: वर्षा जल संचयन और जल के दुरुपयोग को रोककर जल संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है।

5. जागरूकता फैलाना: स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों में पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं।

पर्यावरण हमारी धरोहर है, जिसे हमें अगली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना है। यह न केवल हमारा कर्तव्य है, बल्कि हमारी आवश्यकता भी है। पर्यावरण के बिना न तो जीवन संभव है और न ही प्रगति। इसलिए, हमें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से इसके संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। छोटे-छोटे कदम, जैसे पेड़ लगाना, कचरे का सही निपटान, और ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण को स्वस्थ और संतुलित रखने में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आइए, हम सब मिलकर एक हरे-भरे और स्वच्छ भविष्य का निर्माण करें।

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और देवनागरी का प्रचार आवश्यक है।

- लाला लाजपत राय

भीतर का दरिया - मन

प्रिया शर्मा

छोटी-छोटी घटनाओं का समूह ही जीवन है। यहां सब धीरे-धीरे होता है। जैसे एक-एक सांस जीवन बनाती है, हृदय की एक-एक धड़कन जीवन देती है, इसी तरह एक-एक कदम हमें हमारे लक्ष्य तक पहुंचा देता है। प्रकृति में भी बीज धीरे-धीरे अंकुरित होकर पौधा बनता है और फिर पेड़। स्कूली जीवन में अध्यापकों द्वारा पढ़ाए गए कुछ दोहे जो हमारे जीवन में पूर्ण उतरते हैं जैसे कि कबीर दास जी का 'धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होए, माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होए।'

लेकिन यदि हम अपने मन को देखें तो एक मन ही ऐसा है जो धीरे-धीरे में विश्वास नहीं रखता है। वह प्रकृति के बिल्कुल विपरित जाकर तेजी से दौड़ना शुरू कर देता है। वह चाहता है कि जल्दी-जल्दी उसकी सारी इच्छाओं की पूर्ति हो जाए। जल्दी से जल्दी उसे बड़ी से बड़ी खुशी मिल जाए। वहीं दूसरी ओर कुछ बड़ा घटने के इंतजार में वह दुखी भी रहता है। जबकि जीवन में हर बड़ी खुशी के पीछे छोटी-छोटी खुशियां, छोटी-छोटी मेहनत और छोटे-छोटे कर्मों का समूह होता है। मन हमेशा इस बात का विरोध करता है और अचानक कुछ बड़ा चाहता है। मन की यही हलचल मनुष्य को अशांति देती है। भागते हुए मन के कारण हमारे निर्णय भी कमजोर होते चले जाते हैं। भागते हुए ख्यालों से जब हम भर जाते हैं तो उसको मन कहते हैं और जब इन ख्यालों से खाली होते हैं तो उसको विवेक कहते हैं।

भागता हुआ मन अक्सर सोचने-समझने की शक्ति खो

देता है जिससे व्यक्ति का विवेक दब जाता है और साथ ही निर्णय लेने की शक्ति हिल जाती है, कमजोर हो जाती है। ऐसी स्थिति आने पर व्यक्ति का आत्मविश्वास कमजोर हो जाता है, उसका मन तनावग्रस्त रहता है। विवेक न होने पर व्यक्ति नकारात्मक विचारों से भरा रहता है और प्रत्येक कार्य होने से पहले ही उसके बारे में नकारात्मक धारणा बना लेता है।

जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में विवेक का अभाव होने पर उसे असफलताओं का सामना करना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार यदि नकारात्मक विचार मनुष्य के मन पर, दिमाग पर, जीवन पर कब्जा कर लें तो एक खुशहाल जीवन तहस-नहस हो जाता है। मनुष्य को अपने जीवन को खुशहाल बनाने के लिए अपने मन रूपी घोड़े पर लगाम कसनी आनी चाहिए क्योंकि ठहरा हुआ मन भारी से भारी समस्याओं का समाधान करता है और विवेक को जगा देता है। लेकिन मन को यह लगता है कि वह भागकर समस्याओं का समाधान जल्दी कर देगा। मन की यह भगदड़ मन को कमजोरी, तनाव व दुखों से भरती है, जैसे जब घोड़े दौड़ते हैं तो उनके पीछे केवल धूल उड़ती है और वह धूल आंखों में जाकर आगे का रास्ता दिखाना बंद कर देती है। ऐसे ही मन जब ख्यालों में दौड़ता है तो तनाव, विरोध, दुख, नकारात्मकता की एक धूल पैदा करता है। जीवन में जो भी शुभ, सकारात्मक घटता है, वह मन की गहराइयों और मन के ठहरेपन के आधार पर ही घटता है।

हमारा मन अति सूक्ष्म है, पर है बड़ा शक्तिशाली। अगर मनुष्य अपने मन पर काबू पाना सीख जाए तो समझो उसने सारी दुनिया को मुठ्ठी में कर लिया। जैसे एक घर होता है, उसमें एक छोटा सा कमरा होता है, कमरे में छोटा सा दरवाजा होता है और उस दरवाजे में छोटी सी कुंडी होती है, कुंडी से छोटा ताला और ताले से छोटी चाबी होती है। जिस प्रकार छोटी सी चाबी से ताला लगाते ही सारे घर का कब्जा हमारी जेब में होता है, ठीक उसी प्रकार छोटे से मन को कब्जे में करते ही सारा संसार हमारे कब्जे में आ जाता है। जिस प्रकार से चाबी को एक

तरफ घुमाने से ताला बंद हो जाता है, और दूसरी तरफ घुमाने से ताला खुल जाता है, ठीक इसी तरह से यदि मनुष्य चाहे तो वह अपने मन की चाबी को घुमाकर परमात्मा से जुड़ सकता है और जीवन की परेशानियों से निजात पा सकता है और यदि वह चाहे तो अपने मन की चाबी को दूसरी तरह घुमाकर संसार में खुल सकता है। मन की तुलना हम हाथी से कर सकते हैं। हाथी को जितना भी नहला-धुलाकर खड़ा कर लो लेकिन वो फिर भी अपनी सूंड से धूल-मिट्टी अपने ऊपर डाल लेता है। इसी प्रकार हमारे मन पर भी धूल-मिट्टी चढ़ती रहती है।

हमारा मन दिन-प्रतिदिन कल्पनाओं से भरा रहता है। माना जाए तो विश्व का असीम पुस्तकालय हमारे मन में ही विद्यमान है। यदि कोई मुझसे पूछे कि मनुष्य को दुखी रखने के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी कौन है तो मैं नि:संकोच कहूंगी हमारा मन। वास्तव में हमारे मन के विचार, मन की दशा या मन की स्थिति ही अधिकांश समस्याओं की जड़ है। जब मनुष्य बीमार या चिंताग्रस्त होता है तो वह डॉक्टर के पास जाता है और डॉक्टर कह देते हैं कि कोई खास बात नहीं है, इसके अलावा वह कुछ कर भी नहीं सकते। कारण यह है कि मन में घुमड़ने वाले आलतू-फालतू विचारों का कोई क्या इलाज करे। तनाव की कोई दवा नहीं होती, इस पर तो स्वयं नियंत्रण करना होता है।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति के मन में कुछ न कुछ फालतू विचार पड़े रहते हैं या भटकते रहते हैं। ऐसे विचार जो फालतू, मिथ्या और व्यर्थ होते हैं और जिनका कोई मतलब नहीं होता। बात यहीं तक रहती है तो ठीक थी लेकिन जब ये विचार बहुतायत में हो जाते हैं तो शरीर पर अपना प्रभाव छोड़ने लगते हैं और कोई न कोई विकार उत्पन्न कर देते हैं। अर्थात् जब मन में व्यर्थ के विचार बढ़ जाते हैं तो तरह-तरह के शारीरिक विकार बढ़ जाते हैं जैसे सिरदर्द, नींद न आना, चिड़चिड़ापन, क्रोध अधिक आना, डरना, घबराना आदि। इन विकारों का इलाज दवाओं से नहीं हो सकता बल्कि मन पर नियंत्रण रखकर हो सकता है।

अक्सर आपके विचारों में, मस्तिष्क में, स्मृतियों में न जाने क्या-क्या भरा होता है और वह सब आपके मन में चलने लगता है, जो बिल्कुल भी अच्छी बात नहीं है। ये जो मन होता है इसकी आदत होती है पीसे हुए को बार-बार पीसना। मन पर अगर चोट लगी हुई है तो आप देखेंगे कि मन बार-बार उसी को याद करता है, वह उसे बार-बार दोहराएगा। कोई भी चीज आपको परेशान कर रही है तो मन उसी को आपके सामने लाकर रखेगा। मन की पिसाई उस बात का ऐसा रूप बना देती है कि बात बेकार बन जाती है, दुखदायी बन जाती है। यदि किसी की कोई बात आपको बुरी लगी है तो आपका मन बार-बार दोहराएगा कि उसने तुम्हारा अपमान किया है। अगर उस बात को वहीं छोड़ दें तो बात खत्म हो जाती है और यदि उस बात को वहीं खत्म न किया जाए तो आपका मन उस बात की ऐसी पिसाई करता है कि आपका मस्तिष्क क्षतिग्रस्त हो जाता है, जिसकी भरपाई कर पाना नामुमकिन होता है।

हमारे भीतर दो मन कार्यरत रहते हैं एक चेतन मन, दूसरा अवचेतन मन। चेतन मन से तो सभी भलीभांति परिचित हैं लेकिन अवचेतन मन से नहीं। वास्तव में अवचेतन मन हमारे शरीर का वह छिपा हुआ हिस्सा होता है जो हमारे अतीत के अनुभव और यादों का संग्रह करके रखता है। विश्व की सबसे बड़ी हार्ड-डिस्क जो वर्षों की स्मृतियों को पलभर में हमारे समक्ष लाकर रख देता है। अब चाहे वह स्मृतियां सुख देने वाली हों या दुखी करने वाली। अगर अंदाजा लगाया जाए तो मनुष्य दुखदायक स्मृतियों का भंडार ज्यादा रखता है। इसी कारण उसका मन उसे उन परिस्थितियों का सामना बार-बार करवाता है। अपने जीवन को आनंदमय व सुखदायी बनाने के लिए मनुष्य को अच्छी स्मृतियों का भंडार अपने अवचेतन मन में रखना चाहिए और बुरी स्मृतियों से निजात पाने के लिए धैर्यपूर्वक परमात्मा की ओर ध्यान लगाना चाहिए, क्योंकि बाहर का शोर नहीं, मन का शोर ज्यादा परेशान करता है।

"मन की जो सुन चलता, पाए राह अनंत,
बाहर दुनिया शोर है, भीतर गूंजे संत।
मन बहका तो दूर तू, मन रुके तो पास,
जो मन से जुड़ गया, उसको मिला प्रकाश"।

रक्तदान: जीवन रक्षा का महान कार्य

प्रेम ग्रोवर

रक्तदान को महादान कहा जाता है, क्योंकि यह न केवल किसी की जान बचाता है, बल्कि समाज में मानवता और एकजुटता का संदेश भी फैलाता है। भारत सरकार के केंद्रीय कार्यालय में कार्यरत होते हुए, मैंने अपने सामाजिक दायित्व को समझते हुए ए.जी. हरियाणा ब्लड डोनर्स सोसाइटी के साथ मिलकर अब तक 41 रक्तदान शिविरों के आयोजन में आयोजक सचिव के रूप में भागीदारी निभाई है। मेरे इन प्रयासों के लिए ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ और ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग, जीएमसीएच-32, चंडीगढ़ द्वारा चार बार प्रमाण-पत्र व

शील्ड देकर सम्मानित किया गया है, जो मेरे लिए गर्व का विषय है। मेरी रक्तदान की यात्रा 18 वर्ष की आयु में शुरू हुई, जब मैंने पहली बार अपने भाई के लिए रक्तदान किया था। उस अनुभव ने मुझे इस नेक कार्य के प्रति और अधिक समर्पित कर दिया। मैंने भी 37 बार रक्तदान किया है। इस यात्रा में मेरी पत्नी ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है। उनकी प्रेरणा और समर्थन ने मुझे इस पुनीत कार्य को निरंतर जारी रखने की शक्ति दी है। साथ ही इस नेक कार्य से प्रेरित होकर मेरे दो बेटे भी नियमित रूप से रक्तदान कर रहे हैं।

रक्त, मानव शरीर का वह अमूल्य तत्व है, जिसका कोई विकल्प नहीं है। इसे कृत्रिम रूप से तैयार नहीं किया जा सकता, और केवल मानव ही मानव को रक्त प्रदान कर सकता है। हर वर्ष लाखों लोगों को दुर्घटना, सर्जरी, प्रसव, थैलेसीमिया, कैंसर जैसी बीमारियों या अन्य चिकित्सीय आपात स्थितियों के कारण रक्त की आवश्यकता पड़ती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, यदि किसी देश की एक प्रतिशत आबादी नियमित रूप से रक्तदान करे, तो वहां रक्त की कमी को काफी हद तक दूर किया जा सकता है। भारत में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, फिर भी मांग और आपूर्ति के बीच अंतर बना हुआ है।

रक्तदान शिविरों का आयोजन इस अंतर को कम करने का एक प्रभावी माध्यम है। ए.जी. हरियाणा ब्लड डोनर्स सोसाइटी द्वारा आयोजित 41 शिविरों में सैकड़ों लोगों ने रक्तदान किया है, जिससे न केवल कई जिंदगियां बचीं हैं, बल्कि लोगों में रक्तदान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित हुआ है। इन शिविरों में हमने अपने साथी कार्मिकों को न केवल प्रेरित किया, बल्कि उन्हें यह भी बताया कि रक्तदान न सिर्फ दूसरों के लिए, बल्कि स्वयं के लिए भी लाभकारी है।

रक्तदान के फायदे

रक्तदान न केवल दूसरों के लिए जीवन रक्षक है, बल्कि दानकर्ता के लिए भी कई शारीरिक और मानसिक लाभ प्रदान करता है। रक्तदान के कुछ प्रमुख फायदे:

1. शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार

- रक्त संचलन में सुधार: रक्तदान करने से शरीर में नया रक्त बनता है, जिससे रक्त संचालन बेहतर होता है और हृदय संबंधी समस्याओं का जोखिम कम होता है।
- लौह तत्व (Iron) का संतुलन: नियमित रक्तदान शरीर में आयरन के स्तर को संतुलित रखता है। अत्यधिक आयरन हृदय रोगों का कारण बन सकता है और रक्तदान इस जोखिम को कम करता है।
- नई रक्त कोशिकाओं का निर्माण: रक्तदान के बाद शरीर में नई रक्त कोशिकाएं बनती हैं, जो शरीर को तरोताजा और ऊर्जावान बनाती हैं।
- हृदय स्वास्थ्य: अध्ययनों के अनुसार, नियमित रक्तदान करने वालों में हृदयाघात और स्ट्रोक का खतरा कम होता है।

2. मानसिक और भावनात्मक लाभ

- आत्मसंतुष्टि और गर्व: रक्तदान करने से यह अहसास होता है कि आपने किसी की जान बचाने में योगदान दिया है। यह मानसिक शांति और आत्मसंतुष्टि प्रदान करता है।
- तनाव में कमी: दूसरों की मदद करने से तनाव और चिंता कम होती है। रक्तदान करने से दानकर्ता को मानसिक रूप से सकारात्मक महसूस होता है।
- सामाजिक जुड़ाव: रक्तदान शिविरों में भाग लेने से सामुदायिक भावना बढ़ती है और लोग एक-दूसरे के साथ जुड़ते हैं।

3. स्वास्थ्य जांच का अवसर

- रक्तदान से पहले दानकर्ता की स्वास्थ्य जांच की जाती है, जिसमें रक्तचाप, हीमोग्लोबिन, और अन्य आधारभूत जांचें शामिल होती हैं। यह एक नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच का अवसर प्रदान करता है।
- रक्तदान के बाद रक्त की जांच की जाती है, जिससे दानकर्ता को अपने स्वास्थ्य की जानकारी मिलती है। यदि कोई असामान्यता हो, तो उसे समय पर उपचार मिल सकता है।
- कुछ ब्लड बैंकों में रक्तदाताओं को हेपेटाइटिस-बी, हेपेटाइटिस-सी, एचआईवी और सिफलिस जैसी बीमारियों की जांच के परिणाम भी प्रदान किए जाते हैं।

4. समाज के लिए योगदान

- रक्तदान से न केवल एक व्यक्ति की जान बचती है, बल्कि यह पूरे समाज में सकारात्मक संदेश फैलाता है। एक यूनिट रक्त से कई लोगों की जान बचाई जा सकती है, क्योंकि रक्त को उसके विभिन्न घटकों (लाल रक्त कोशिका, प्लेटलेट्स, प्लाज्मा) में विभाजित किया जा सकता है।
- नियमित रक्तदान से ब्लड बैंकों में रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित होती है, जिससे आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित सहायता मिलती है।

अनुभव और प्रयास

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने कार्यालय के कार्मिकों के साथ मिलकर रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किए हैं। प्रत्येक शिविर में, न केवल रक्तदान की प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने का ध्यान रखा, बल्कि लोगों को इसके वैज्ञानिक और सामाजिक पहलुओं से भी अवगत कराया है। हमने अपने साथी कार्मिकों को बताया कि रक्तदान पूरी तरह सुरक्षित है और इससे शरीर को कोई नुकसान नहीं होता है।

इन प्रयासों का परिणाम यह रहा कि कई लोग, जो पहले

रक्तदान करने से हिचकिचाते थे, अब नियमित रक्तदाता बन चुके हैं। इन शिविरों ने विभिन्न आयु वर्ग और पृष्ठभूमि के लोगों को एक मंच प्रदान किया, जिससे सामुदायिक एकता को बढ़ावा मिला। ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग, जीएमसीएच-32, चंडीगढ़ द्वारा मुझे सम्मानित किया जाना मेरे लिए एक प्रेरणा स्रोत है, जो मुझे इस नेक कार्य को और अधिक उत्साह के साथ करने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

रक्तदान से संबंधित कुछ मिथक और सच्चाई

रक्तदान के प्रति लोगों में कई मिथक प्रचलित हैं, जो उन्हें इस कार्य से रोकते हैं। यहां कुछ सामान्य मिथक और उनकी सच्चाई दी गई है:

- मिथक: रक्तदान करने से कमजोरी आती है। सच्चाई: रक्तदान के बाद शरीर कुछ ही घंटों में सामान्य हो जाता है और कुछ दिनों में खोया हुआ रक्त फिर से बन जाता है। पर्याप्त पोषण और आराम लेने से कोई कमजोरी नहीं होती।
- मिथक: रक्तदान दर्दनाक होता है। सच्चाई: रक्तदान की प्रक्रिया में केवल सुई चुभने का हल्का सा अहसास होता है, जो कुछ सेकंड तक रहता है। इसके बाद कोई दर्द नहीं होता।
- मिथक: हर कोई रक्तदान नहीं कर सकता। सच्चाई: 18 से 65 वर्ष की आयु का कोई भी स्वस्थ व्यक्ति, जिसका वजन 45 किलोग्राम से अधिक हो और हीमोग्लोबिन का स्तर सामान्य हो, रक्तदान कर सकता है।

रक्तदान एक ऐसा कार्य है, जो न केवल दूसरों के लिए जीवनदायी है, बल्कि स्वयं के लिए भी शारीरिक और मानसिक लाभकारी है। हमारे द्वारा आयोजित 41 रक्तदान शिविरों के अनुभव ने मुझे यह सिखाया है कि छोटे-छोटे प्रयासों से भी समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। अपने सभी साथी कार्मिकों का आभारी हूं, जिन्होंने इस प्रयास में हमेशा साथ दिया। हम अपने सक्षम प्राधिकारियों के भी आभारी हैं, उन्होंने हमें हर वह सुविधा प्रदान की जो इन शिविरों के आयोजन के लिए अपेक्षित थी, उनके प्रेरणादायक शब्दों ने हमेशा हमारे अंदर नई ऊर्जा का संचार किया।

सभी पाठकों से आग्रह करता हूं कि वे रक्तदान के महत्व को समझें और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। यदि आप स्वस्थ हैं, तो रक्तदान करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। आइए, मिलकर हम एक ऐसा समाज बनाएं, जहां रक्त की कमी के कारण किसी की जान न जाए। रक्तदान करें, जीवन बचाएं!

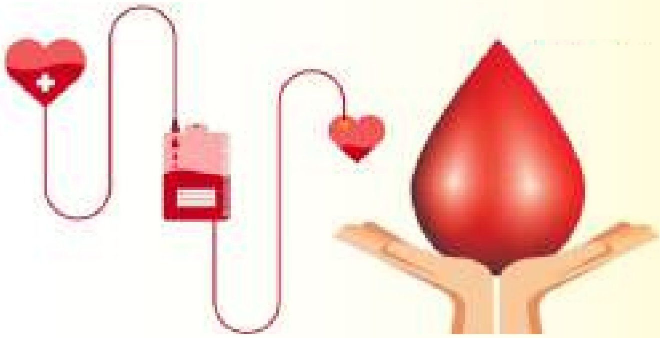

हिंदी देश की एकता की ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।

- इंदिरा गांधी

प्रकृति प्रेमी के लिए विशाखापत्तनम की खूबसूरती

ज्योति कुमारी

आंध्र प्रदेश के पूर्वी तट पर स्थित एक खूबसूरत शहर विशाखापत्तनम 'वाइजैग', 'हॉर्बर सिटी', 'सिटी ऑफ डेस्टिनी' आदि नामों से भी जाना जाता है। यहां प्रकृति की विस्मयकारी चित्रकारी की कोई कमी नहीं। यह शहर बंगाल की खाड़ी के किनारे बसा है और अपने मनमोहक समुद्र तटों, सुरम्य पहाड़ियों, प्राचीन गुफाओं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यदि आप एक ऐसी यात्रा की तलाश में हैं जो आपको प्रकृति की सुंदरता, इतिहास की गहराई और शहरी जीवन के रोमांच का अनुभव करा सके, तो विशाखापत्तनम निश्चित रूप से आपकी सूची में होना चाहिए। तो आज चलते हैं इस तटीय शहर के खास सफर पर समुद्र तट के साथ खूबसूरत पर्वतमालाएं, शीशे सा चमकता समंदर का पानी और नजदीक ही हरी-भरी पहाड़ियां।

प्राकृति सौंदर्य का आनंद मनमोहक समुद्र तटों के साथ

'वाइजैग' के मुख्य आकर्षणों में से एक इसके शानदार समुद्र तट हैं। ऋषिकोंडा बीच अपने सुनहरे रेत और शांत पानी के लिए जाना जाता है, जहां आप तैराकी, सर्फिंग और अन्य जल क्रीड़ाओं का आनंद ले सकते हैं। यह परिवारों और दोस्तों के साथ पिकनिक के लिए भी

एक आदर्श स्थान है। यारदा बीच जो शहर से थोड़ी दूर है, अपनी बेदाग सुंदरता और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है, यहां का नीला पानी और हरे-भरे पहाड़ एक अद्भूत दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

इसके अलावा, कैलाशगिरि एक पहाड़ी पार्क है, जहां से शहर और समुद्र का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। यहां भगवान शिव और देवी पार्वती की विशाल मूर्तियां स्थापित हैं और एक रोप-वे भी है जो आपको ऊपर तक ले जाता है, जिससे यात्रा और भी रोमांचक हो जाती है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत

विशाखापत्तनम का इतिहास भी उतना ही समृद्ध है जितना कि इसकी प्राकृतिक सुंदरता। विशाखापत्तनम से थोड़ी दूर पर स्थित हैं बोर्रा गुफाएं, जो अपनी अद्भुत स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। स्थानीय भाषा में 'बोर्रा' मूल उत्तर आंध्र बोली में तेलुगू शब्द है, जिसका अर्थ है छेद (मानक तेलुगू में 'बोरिया') और गुफा के शीर्ष पर एक बड़ा छेद है, जिसके कारण इन्हें यह नाम मिला है। ये

गुफाएं लाखों साल पुरानी मानी जाती हैं और अंदर की प्राकृतिक आकृतियां देखने लायक हैं। इसके अलावा, अराकू घाटी (Araku Valley), जो अपने कॉफी बागानों, झरनों और आदिवासी संग्रहालय के लिए जानी जाती है। यह उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थान है जो प्रकृति और आदिवासी संस्कृति का अनुभव करना चाहते हैं।

पनडुब्बी संग्रहालय (आईएनएस कुरसुरा) एक और अनूठा आकर्षण है। यह भारत का एकमात्र पनडुब्बी संग्रहालय है, जहां आप भारतीय नौसेना की सेवानिवृत्त पनडुब्बी आईएनएस कुरसुरा के अंदर जाकर उसके जीवन को करीब से अनुभव कर सकते हैं। आईएनएस कुरसुरा ने 1971 के भारत-पाक युद्ध में एक

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह बच्चों और बड़ों दोनों के लिए एक ज्ञानवर्धक और रोमांचक अनुभव है। शहर में कई मंदिर भी हैं, जैसे कि सिम्हाचलम मंदिर, जो भगवान नरसिंह को समर्पित है। यह मंदिर अपनी वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है।

व्यजनों का स्वाद

विशाखापत्तनम में आपको आंध्र प्रदेश के पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लेने का अवसर मिलेगा। अन्ना (भात) के साथ विभिन्न प्रकार की करी, पुलीहोरा (इमली चावल), और समुद्री भोजन यहां की विशेषता है। स्ट्रीट फूड, खासकर शाम के समय यहां की यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कैसे पहुंचे और कब जाएं

विशाखापत्तनम का अपना हवाई अड्डा है, जो भारत के प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। यह एक महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन भी है और राष्ट्रीय राजमार्गों द्वारा भी जुड़ा हुआ है। वाइजैग घूमने का सबसे अच्छा समय अक्तूबर से मार्च तक है, जब मौसम सुहावना और आरामदायक होता है।

विशाखापत्तनम वास्तव में एक ऐसी जगह है जो हर तरह के यात्री को कुछ न कुछ प्रदान करती है। चाहे आप रोमांच के शौकीन हों, प्रकृति प्रेमी हों, या इतिहास में रुचि रखते हों, यह शहर आपको निराश नहीं करेगा। तो अपनी अगली छुट्टी के लिए विशाखापत्तनम को चुनें और एक अविस्मरणीय अनुभव के लिए तैयार हो जाएं।

'रेत पर पैरों के निशान, मिटते ही जाते,
यादें समेटे, लहरों संग बहते जाते।'

मुस्कान की ताकत

मुनीष भाटिया

तकलीफ हर व्यक्ति के जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है। यह जीवन की उस सच्चाई का प्रतीक है जो हमें मजबूत और परिपक्व बनाती है। तकलीफ के बिना शायद खुशी का सही मायने में अनुभव नहीं किया जा सकता है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति की तकलीफ उसके चेहरे पर साफ झलके। तकलीफ एक गहरी भावना है जो अक्सर व्यक्ति के मन और आत्मा में छिपी होती है। हर व्यक्ति तकलीफ को अपने ढंग से अनुभव करता है। कुछ लोग अपनी परेशानी को खुलकर व्यक्त कर देते हैं, जबकि कुछ इसे अपने भीतर दबाए रखते हैं। तकलीफ को चेहरे पर न दिखाने का मतलब यह नहीं है कि वह व्यक्ति दर्द महसूस नहीं कर रहा। यह सिर्फ उसकी सहनशक्ति और मानसिक मजबूती का प्रतीक हो सकता है। एक मजदूर जो दिन-रात कठिन परिश्रम करता है, हो सकता है कि वह अपने दर्द और थकान को छिपाकर अपने परिवार को खुशी देने का प्रयास करे। उसकी मुस्कान भले ही उसके चेहरे पर हो, लेकिन उसका जीवन का संघर्ष उनके प्रयासों में छिपा होता है। यह सिर्फ उसकी सहनशक्ति और मानसिक मजबूती का प्रतीक हो सकता है। एक मां जो अपने बच्चों की परवरिश के लिए रातों की नींद त्याग देती है। चाहे उसे खुद कितनी ही तकलीफ क्यों न हो, वह अपने चेहरे पर मुस्कान लिए हर सुबह अपने बच्चों के लिए तैयार रहती है। उसके बलिदान और धैर्य को देखकर समझा जा सकता है कि तकलीफ को दबाकर मुस्कुराना मानसिक मजबूती और प्रेम का एक अनूठा उदाहरण है। किसी के चेहरे की मुस्कान उसकी आंतरिक स्थिति का पूरा चित्रण नहीं करती। हर मुस्कान के पीछे एक संघर्ष, और हर संघर्ष के पीछे एक गहरी सहनशक्ति छुपी हो सकती है।

हमारा समाज अक्सर तकलीफ को कमजोरी के रूप में देखता है। लोग सोचते हैं कि तकलीफ व्यक्त करना उन्हें दूसरों के सामने कमजोर बना देगा। यही कारण है कि कई लोग अपनी तकलीफ को छुपाते हैं और अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखते हैं। लेकिन यह मुस्कान हमेशा उनकी खुशी का प्रतीक नहीं होती, बल्कि यह उनके संघर्ष और साहस की गवाही देती है। एक विद्यार्थी जो परीक्षा में असफल हो जाता है, वह अपने दोस्तों और परिवार के सामने अपनी परेशानी को प्रकट नहीं करता। वह अपनी असफलता को छिपाकर और अधिक मेहनत करने का निर्णय लेता है। इस प्रकार, उसका चेहरा भले ही सामान्य दिखे, लेकिन भीतर की जंग वह अकेले ही लड़ता है। जीवन के यह उतार-चढ़ाव हमें सिखाते हैं कि जीवन में संघर्ष के बिना सफलता का स्वाद अधूरा है। यह हमारे धैर्य, आत्मबल, और सहनशक्ति को बढ़ाने का अवसर

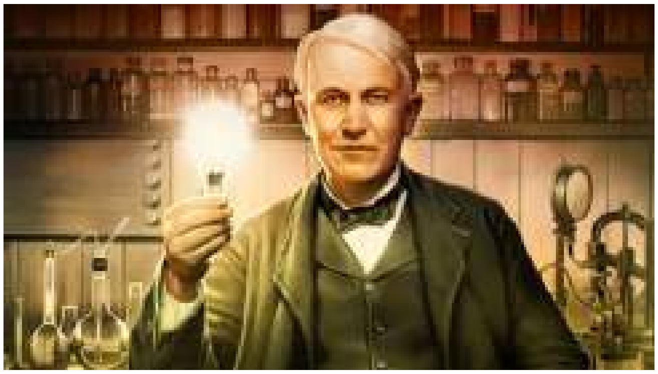

देती है। जीवन में जो लोग तकलीफों का सामना करते हैं, वे अक्सर अधिक संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं। महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन जिन्होंने बिजली के बल्ब का आविष्कार करने के लिए हजारों

असफल प्रयास किए। उन्होंने अपनी असफलता से कभी हार नहीं मानी और उनके अंदर का संघर्ष और आत्मविश्वास अंततः उनकी सफलता का कारण बना। यह उदाहरण हमें सिखाता है कि तकलीफ हमें मजबूत और निडर बनाती है।

जीवन के संघर्ष हमें यह समझाते हैं कि दर्द भी एक शिक्षक है। जरूरी नहीं कि हर तकलीफ चेहरे पर दिखे, लेकिन वह व्यक्ति के अनुभवों और व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करती है। हमें चाहिए कि हम न केवल अपनी तकलीफों को स्वीकार करें, बल्कि दूसरों के दर्द को भी समझें और उनके प्रति सहानुभूति दिखाएं। यही जीवन का असली सार है। कभी-कभी तकलीफ का सामना करने वाले व्यक्ति को सिर्फ सहानुभूति और समझ की जरूरत होती है। हमें यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि हर व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी प्रकार के कष्टों से गुजर रहा है। किसी की परेशानी भले ही छोटी लगे, लेकिन उनके लिए वह बहुत बड़ी हो सकती है। एक डॉक्टर जो मरीजों का इलाज करता है, वह खुद भी निजी तकलीफों से जूझ सकता है। लेकिन वह अपने दर्द को दरकिनार कर दूसरों की मदद करता है। ऐसे लोगों के प्रति हमारा दायित्व बनता है कि हम उनकी भावनाओं और संघर्षों को समझें। जीवन में प्रत्येक कार्य अपने समय पर होता है। जैसे पौधों पर फल और फूल अपने सही समय पर आते हैं, वैसे ही जीवन में हर घटना का एक निश्चित समय होता है। यह हमें धैर्य रखना और सही अवसर की प्रतीक्षा करना सिखाता है। जब हम यह समझ लेते हैं कि हर चीज अपने समय पर होती है, तब हम अपने जीवन के संघर्षों और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर पाते हैं। हमारा दायित्व है कि हम अपने आसपास के लोगों की भावनाओं और संघर्षों को समझें। हमें उनकी मदद के लिए आगे आना चाहिए और उन्हें यह एहसास दिलाना चाहिए कि वे अकेले नहीं हैं। जब हम एक-दूसरे की भावनाओं और संघर्षों को समझते हैं, तो हम समाज में एकजुटता का निर्माण करते हैं। ऐसे समाज में लोग एक-दूसरे की मदद करते हैं, और यह समाज अधिक मजबूत और सहायक बनता है। यह मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है और लोगों को सुरक्षित महसूस करवाता है।

चूंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वे हिंदी को अपनी भाषा समझकर अपनाएं।

- डा. भीमराव अम्बेडकर

केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम की यात्रा: आध्यात्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव

देवीदत्त जोशी

उत्तराखंड, जिसे प्राचीन काल से "देवभूमि" के नाम से जाना जाता है, हिमालय की गोद में बसे इस राज्य में हर कदम पर ईश्वरीय उपस्थिति का अनुभव होता है। यहां पर कई पवित्र स्थल है, जहां प्रकृति और आध्यात्म का अनूठा संगम

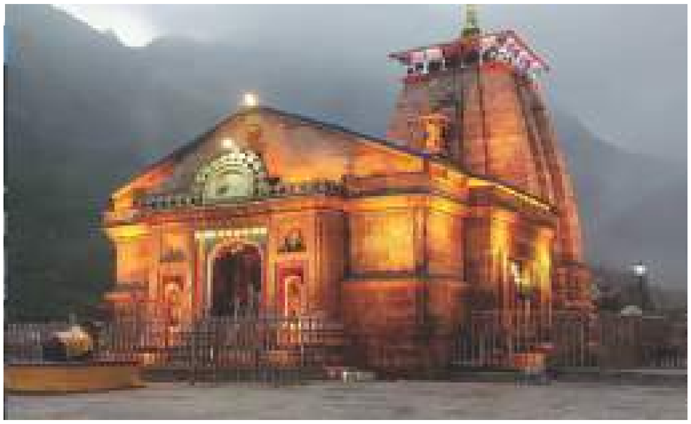

देखने को मिलता है। यहां की पवित्र नदियां, बर्फ से ढके पर्वत, घने जंगल और प्राचीन मंदिर न केवल श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं, बल्कि प्रकृति प्रेमियों के लिए भी एक स्वर्ग है। हाल ही में, हमने अपने परिवार के साथ अपने गांव ईड़ा आमडाली, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड से टेम्पो ट्रैवलर के माध्यम से केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम की यात्रा की। यह यात्रा हमारे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक रही। हमारी यात्रा हमारे गांव ईड़ा आमडाली से एक ठंडी और ताजी सुबह शुरू हुई। गांव से निकलकर जैसे ही हम मुख्य सड़क पर पहुंचे, हिमालय की विशालता और उसकी शांति ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। हमारे परिवार के सभी सदस्यों में उत्साह और भक्ति का अनोखा जोश था, क्योंकि हम केदारनाथ और बद्रीनाथ जैसे पवित्र धामों की यात्रा पर जा रहे थे।

केदारनाथ की ओर बढ़ते समय, हमारा मार्ग अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों के किनारे-किनारे गुजरा। इन नदियों का पानी, जो हिमालय के ग्लेशियरों से निकलता है, इतना स्वच्छ और चमकदार है कि वह सूरज की किरणों में हीरे की तरह चमक रहा था। सड़क के दोनों ओर घने देवदार और चीड़ के जंगल थे, जिनके बीच से हवा के झोंके पेड़ों की सनसनाहट के साथ एक मधुर संगीत उत्पन्न कर रहे थे। रास्ते में पड़ने वाले छोटे-छोटे गांव, जहां स्थानीय लोग अपनी दिनचर्या में व्यस्त थे, हमें उत्तराखंड की सादगी और आतिथ्य का अनुभव करा रहे थे। गांवों में बने छोटे-छोटे मंदिर, रंग-बिरंगे फूलों से सजे हुए और स्थानीय लोगों की भक्ति भरी मुस्कान ने हमारी यात्रा को और भी खास बना दिया। रास्ते में कई जगहों पर छोटे-छोटे झरने दिखाई दिए, जिनका पानी चट्टानों से टकराकर एक मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहा था। गौरीकुंड के पास पहुंचते ही मंदाकिनी नदी का तेज प्रवाह और उसका संगीतमय स्वर मन को शांति दे रहा था। यहां का वातावरण इतना शुद्ध और ताज़ा था कि हर सांस के साथ एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा था। गौरीकुंड तक का रास्ता, जो घुमावदार पहाड़ी सड़कों से होकर गुज़रता है, प्रकृति की अनुपम छटा का दर्शन कराता है। यहां के पहाड़ों की चोटियां मन को आनंदित कर रही थीं।

गौरीकुंड में स्थित तप्त कुंड में स्नान करने के पश्चात ही केदारनाथ धाम की यात्रा शुरू होती है। केदारनाथ पहुंचने के लिए हमें गौरीकुंड से लगभग 16 किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ी। यह चढ़ाई शारीरिक रूप से थकान भरी थी, लेकिन रास्ते की सुंदरता और भक्ति का उत्साह हमें थकने नहीं दे रहा था। पैदल मार्ग पर चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़, बीच-बीच में दिखाई देने वाले हिमखंड, और ठंडी हवाएं हमें एक अलग ही ऊर्जा दे रही थी। रास्ते में कई छोटे-छोटे पड़ाव थे, जहां हमने चाय और स्थानीय व्यंजनों का आनंद लिया। केदारनाथ मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है, 11,755 फीट की ऊंचाई पर हिमालय की गोद में बसा है। मंदिर के चारों ओर बर्फीले पहाड़ों का दृश्य और मंदाकिनी नदी का प्रवाह इसे स्वर्ग सा बनाता है। मंदिर की प्राचीन वास्तुकला, पत्थरों से बनी दीवारें, और उसका शांत

वातावरण मन को भक्ति और ध्यान में डुबो देता है। मंदिर में प्रवेश करते ही एक अनोखी शांति का अनुभव हुआ। भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के दर्शन और वहां की पवित्रता ने हमारे मन को शुद्ध और शांत कर दिया। मंदिर के पुजारी द्वारा की गई पूजा और मंत्रोच्चार ने वातावरण को और भी दिव्य बना दिया। हमने मंदिर के पास कुछ समय ध्यान और प्रार्थना में बिताया, यह अनुभव इतना गहन था कि वह हमारे मन में हमेशा के लिए अंकित हो गया।

केदारनाथ धाम के दर्शन के बाद, हमने बद्रीनाथ धाम की ओर प्रस्थान किया। यह यात्रा भी अपने आप में अनूठी थी। यह रास्ता भी हिमालय के कई गहरे और रहस्यमयी हिस्सों से होकर गुजरता है, और हर मोड़ पर प्रकृति का एक नया रूप देखने को मिलता है। रुद्रप्रयाग में अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों का संगम एक अद्भुत दृश्य था। दोनों नदियों का पानी एक-दूसरे में मिलकर नीला-हरा रंग उत्पन्न कर रहा था, जो प्रकृति की कारीगरी का एक अनुपम उदाहरण पेश कर रहा था। यहां का संगम स्थल इतना पवित्र और शांत था कि हम कुछ देर वहां रुककर इस दृश्य का आनंद लेते रहे। जोशीमठ पहुंचते ही हमें नंदा देवी पर्वत की चोटियां दिखाई दीं, जो बर्फ की चादर से ढकी थी। जोशीमठ के सामने 'हाथी पर्वत' नामक एक पर्वत है, जो दिखने में हाथी के आकार का है। यह पर्वत जोशीमठ की उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। इसके अलावा, जोशीमठ त्रिशूल शिखर, बद्री शिखर और कामत शिखर जैसी कई हिमालयी चोटियों से भी घिरा हुआ है। यहां का वातावरण इतना शुद्ध और शांत था कि मन स्वतः ही ध्यानमग्न हो गया। जोशीमठ में स्थित प्रसिद्ध नरसिंह देवता के मंदिर में दर्शन करने के पश्चात् रास्ते में पड़ने वाले छोटे-छोटे ढाबों में हमने स्थानीय व्यंजनों जैसे आलू के गुटके, मंडवे की रोटी, और गरम चाय का आनंद लिया। स्थानीय लोगों की आतिथ्यता और उनकी सादगी ने हमें यह अनुभव कराया कि सच्चा सुख सादगी में ही है।

बद्रीनाथ धाम, जो भगवान विष्णु को समर्पित है, 10,279 फीट की ऊंचाई पर अलकनंदा नदी के तट पर बसा है। मंदिर की प्राचीन वास्तुकला, रंग-बिरंगे प्रवेश द्वार इस स्थान को स्वर्ग सा बनाते हैं। मंदिर के पास बहती

अलकनंदा नदी का नीला पानी और उसका मधुर स्वर मन को शांति प्रदान करता है। मंदिर में प्रवेश करते ही हमें एक गहरी आध्यात्मिक शांति का अनुभव हुआ। भगवान विष्णु की मूर्ति, जो काले पत्थर से बनी है, और मंदिर का पवित्र वातावरण मन को भक्ति में डुबो देता है। यहां की पूजा और आरती का अनुभव इतना गहन था कि हम सभी अपने आप को ईश्वर के और करीब महसूस कर रहे थे।

बद्रीनाथ के दर्शन के बाद, हम वापस अपने गांव की ओर लौटे। वापसी की यात्रा भी बहुत मनोरम थी। केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम की यह यात्रा हमारे लिए एक अद्भुत अनुभव थी, जिसे शब्दों में पूरी तरह बयां करना असंभव है। यह यात्रा न केवल हमारी आस्था को और गहरा करने वाली थी, बल्कि हिमालय की गोद में बसी प्रकृति के अनुपम सौंदर्य को अनुभव करने का अवसर भी थी। रास्तों की खूबसूरती, नदियों का मधुर प्रवाह, पहाड़ों की विशालता, और मंदिरों की पवित्रता ने इस यात्रा को हमारे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक बना दिया। यदि आप भी आध्यात्मिक शांति, प्रकृति की सुंदरता, और हिमालय के रहस्यमयी आकर्षण का अनुभव करना चाहते हैं, तो केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम की यात्रा आपके लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होगी। यह यात्रा न केवल आपके मन को शांति देगी, बल्कि आपको प्रकृति और ईश्वर के साथ गहरा संबंध स्थापित करने का अवसर भी प्रदान करेगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

अमरदीप

आजकल एक शब्द हर बच्चे-युवा-बुजुर्ग की जुबान पर है और वो है AI यानि Artificial Intelligence या अपनी राष्ट्रभाषा में कहें तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता। AI मानव बुद्धि का एक मशीन अनुकरण है। आखिर क्या है ये कि सब इसके पीछे पागल हुए जा रहे हैं। संक्षेप में कहें तो इंसानी कार्यों को आसान बनाने का अलादीन के चिराग का जिन्न है जो सिर्फ एक कमांड में

आपकी सारी परेशानियों को गायब कर सकता है। इसे आप अपनी पढ़ाई से लेकर जीवन के लगभग हर रोजमर्रा के कार्यों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं और यह वास्तविक दुनिया की लगभग सभी चुनौतियों को हल कर सकता है, जो मानव के लिए अभी पूर्ण दक्षता से करना संभव नही है। तो आइए, चर्चा करते हैं कि कैसे यह हमारा जीवन बदल रहा है।

मानवीय कार्य को आसान बनाना:-

AI का पहला बड़ा लाभ यह है कि इससे लगभग हर कार्य में होने वाली मानवीय त्रुटि कम हो जाती है, साथ ही मनुष्यों के लिए जोखिम भी कम हो जाता है। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि इंसानी दिमाग कुछ समय बाद काम के दबाव में तनाव में आ जाता है, जिससे उसकी एकाग्रता में कमी आ जाती है और फलस्वरूप उसकी गलती करने की संभावना में बढ़ोतरी होती है। लेकिन AI के साथ ये सब दिक्कतें नहीं हैं, बस आप उसे प्रोग्राम कीजिए कि कैसे करना है, क्या करना है, बाकि सब वो अपने आप बिना थके कर लेगा। उदहारण के लिए एक कार्टून फिल्म बनाने के लिए पहले ढेर सारा पैसा, वक्त व कार्यबल लगता था लेकिन आज AI से यह काम मिनटों में हो जाता है। उसी तरह किसी चित्र को बनाने के लिए चित्रकार एक सप्ताह तक लगा सकता है, AI उसी चित्र को सिर्फ चंद सेकेंड में बना सकता है।

मानवीय जोखिम व त्रुटि कम करना:-

कठिन या खतरनाक कार्यों को पूरा करने के लिए एआई का उपयोग करने से मनुष्यों को चोट या नुकसान के जोखिम को रोकने में मदद मिल सकती है। मनुष्यों के स्थान पर एआई द्वारा जोखिम उठाने का एक उदाहरण उच्च विकिरण वाले क्षेत्रों जैसे Nuclear Reactor या खदानों में से कोयला निकालना इत्यादि में उपयोग किए जाने वाले रोबोट हो सकते हैं। Nuclear Reactor जहां बिजली बनाई जाती है, वहां मनुष्य उसके विकिरण से गंभीर रूप से बीमार हो सकते हैं। दूसरी तरफ कोयला खदानों में काम करते वक्त पानी भरने या मीथेन गैस के रिसाव से मर सकते हैं, जैसा कि हम आए दिन न्यूज में सुनते रहते हैं। लेकिन रोबोट जो कि एआई से लैस होंगे, वो सटीकता से काम करेंगे और इन खतरों से अप्रभावित भी रहेंगे। यदि कोई घातक त्रुटि होती है, तो रोबोट को फिर से बनाया जा सकता है, लेकिन इंसानी जिंदगी को नहीं।

स्कूल की पढाई में:-

इसका फायदा हमें बच्चों की पढ़ाई में देखने को मिल सकता है। आजकल कोई प्रोजेक्ट बनाना हो या किसी कठिन सवाल का हल निकालना हो या फिर आपको किसी भी सब्जेक्ट से जुड़ी कोई भी सामग्री चाहिए तो आप AI को सिर्फ कमांड दीजिए आपके चिराग के जिन्न Grok, Chat-GPT या Deep-Seek हाजिर हैं आपका

काम करने के लिए। बस इन्हें बताइए और चंद मिनट में सब कुछ हाजिर। न आपका समय लगा न दिमाग को परेशान किया। अब जो आपका समय बचा उसे आप अपने दूसरे काम में लगा सकते हो।

चिकित्सा में इस्तेमाल:-

अस्पताल में छोटे-मोटे ऑपरेशन से लेकर ओपन हार्ट सर्जरी तक हर चीज़ में मदद के लिए डॉक्टर AI और रोबोट का उपयोग करते हैं। सर्जन कहीं दूर बैठे हुए रोबोट की यांत्रिक भुजाओं को नियंत्रित कर सकते हैं क्योंकि रोबोट डॉक्टर को शल्य चिकित्सा स्थल का 3-डी और बड़ा दृश्य देता है। इसके बाद सर्जन कहीं दूर बैठे हुए रोबोट की सहायता से सर्जरी को अंजाम देता है जिससे सर्जरी से जुड़ी जटिलताएं कम हुई हैं और रिकवरी का समय भी कम हुआ है। इसके अलावा AI रोगों के निदान, परिणामों की भविष्यवाणी करने और उपचार की सिफारिश करने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए, AI एल्गोरिदम मानव रेडियोलॉजिस्ट की तुलना में अधिक सटीकता और गति के साथ एक्स-रे (X-Ray) और एमआरआई (MRI) जैसी चिकित्सा छवियों का विश्लेषण कर सकते हैं, जो अक्सर शुरुआती चरणों में कैंसर जैसी बीमारियों का पता लगाते हैं। इसके अलावा नई-नई दवाओं व टीके का परीक्षण भी 3-डी मॉडल द्वारा किया जा सकता है जिससे इन दवाओं के जोखिम को कम किया जा सकता है।

AI से जुड़ी चिंताएं: -

हम इसके फायदों के बारे में चर्चा कर चुके हैं। लेकिन हर चीज की कीमत चुकानी पड़ती है। संचालित मशीनें कई कार्यों को स्वचालित कर सकती हैं, जिससे कुछ क्षेत्रों में नौकरियों का नुकसान हो सकता है। इसके अलावा डेटा गोपनीयता और सुरक्षा भी एक चिंता का विषय है। क्योंकि AI सिस्टम को प्रशिक्षित करने और संचालित करने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, जिससे व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग या हैकिंग का खतरा बढ़ जाता है। हम आजकल AI पर इतना ज्यादा निर्भर हो चुके हैं कि हर काम के लिए सिर्फ इसका सहारा लेते हैं जिससे हमारी न केवल रचनात्मकता में कमी आई है बल्कि सोचने-समझने की क्षमता में कमी आई है। AI का एक और सबसे बड़ा खतरा यह है अगर इनमें स्वयं सोचने-समझने की क्षमता आ गई तो ये मानवता का धरती से सफाया कर सकता है क्योंकि इसे हमारी हर चीज़ का पता है जो हमने ही इसे दी है। ऐसे कई वैज्ञानिक आशंका जता चुके हैं तो ये सब आप पर है कि इसे आप अपना दोस्त बनाना चाहते हैं या इसके गुलाम बनना चाहते हैं।

सबको हिंदी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव-विनिमय से सारे भारत को सुविधा होगी।

- चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

मिट्टी का जोड़

गुरू सरूप बंसल

लाला ओमप्रकाश गांव में परचून की दुकान चलाते हैं। परिवार में उनकी पत्नी निर्मला और दो बेटे हैं। दोनों बेटे सरकारी नौकरी में हैं। बड़ा बेटा रविकान्त चंडीगढ़ में राज्य सरकार के सचिवालय में कार्यरत है, जबकि छोटा बेटा सूर्यप्रकाश दिल्ली में केंद्र सरकार में अधिकारी है। दोनों की दूरी गांव से चार से पांच घंटे की है।

लाला जी की दुकान गांव के बीचोंबीच स्थित है, यानी गांव का हर व्यक्ति, बच्चा, बूढ़ा, महिला, पुरुष किसी न किसी रूप में लाला जी के संपर्क में रहता है। अब उम्र बढ़ने के साथ लाला जी ने दुकान पर मदद के लिए गांव के ही एक लड़के, लोकेश को रख लिया है। वह कोई नौकर नहीं, बल्कि सहयोगी है। उसे वेतन नहीं, बल्कि घर खर्च दिया जाता है, और घर के लिए सामान भी दुकान से ही जाता है। अब सुबह छः बजे दुकान खोलने की जिम्मेदारी लोकेश की हो गई है।

लाला जी खुद अब सुबह जल्दी उठकर अपने पुराने मित्रों—कुलभूषण मास्टर, प्रेमी कम्पाउंडर और राकेश मुंशी के साथ गांव को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली ढाई किलोमीटर लंबी सड़क पर टहलने जाते हैं। फिर गांव के स्कूल में एक घंटा योग और व्यायाम करके घर लौटते हैं। नित्य क्रियाएं और स्नान ध्यान करके दस बजे तक दुकान पहुंच जाते हैं। इसके बाद उनका दिन दुकान पर अच्छे से कटता है। दिन भर दुकान के पास से गुजरने वाले हर व्यक्ति से राम-राम होती रहती है।

दोनों बेटों का गांव आना कम ही हो पाता है। कभी नौकरी की मजबूरी, तो कभी बच्चों की पढ़ाई का दबाव। हां, गर्मी की छुट्टियों में एक सप्ताह के लिए घर बच्चों की हंसी-ठिठोली से हरा-भरा हो जाता है। त्योहारों में भी दोनों एक-दो दिन के लिए गांव आ जाते हैं। बाकी समय लाला जी की दिनचर्या दुकान और दोस्तों के साथ, और निर्मला का समय घर के कामकाज व पड़ोस की बातचीत में बीतता है। दोनों पति-पत्नी की जिंदगी शांत और संतोषजनक रूप से चल रही है।

लेकिन आज सुबह लाला जी के मन में एक विचित्र हलचल हो गई, जैसे किसी शांत जल में कोई भारी पत्थर गिर गया हो। स्कूल में योग के बाद सत्यवान पंच ने एक बात कह दी जो उनके मन को विचलित कर गई। पंच ने कहा "अब तो तुम दोनों बुड्ढा-बुढ़िया अकेले ही रह गए हो। शहर में काम करने वाले बेटे अब वहीं के हो गए हैं। पढ़े-लिखे हैं जरूर, पर मां-बाप का हाल पूछने का समय किसी के पास नहीं है। अगर सपूत होते तो मां-बाप को अपने साथ शहर ले जाते, उन्हें गांव में क्यों छोड़ रखा है?"

लाला जी के मन में बेटों के चेहरे घूम गए। क्या सचमुच उनके बेटे उनसे और निर्मला से प्रेम करते हैं या सब बस दिखावा भर है? चार-पांच घंटे की दूरी है, पर छः-छः महीने निकल जाते हैं बिना गांव आए। हां, कभी-कभी फोन पर औपचारिक बात हो जाती है। निर्मला से अब वीडियो कॉल पर बहुएं और बच्चे बात कर लेते हैं, घर-परिवार की बातें हो जाती हैं पर वह आत्मीयता, वह अपनापन, जो आमने-सामने मिलने में होता है, वह कहां रह गया है?

इन्हीं विचारों में डूबे लाला जी जब घर लौटे, तो निर्मला ने उनके चेहरे की उदासी भांप ली। चेहरे की रंगत उड़ी-उड़ी थी। चाल-ढाल में चुस्ती गायब थी। चाय बनाने को भी नहीं

कहा और न कोई गांव-देश की नई ताजा सुनाई जो अक्सर घर में घुसते ही सुनाते हैं। निर्मला ने चाय बनाई और चाय थमाते हुए पूछ लिया "आज क्या हुआ, तबीयत तो ठीक है?"

लाला जी ने बात टालनी चाही, पर दिल हल्का करने की चाह थी। बोले "सत्यवान पंच की बात मन में बैठ गई है। कहता है कि अब हम दोनों बूढ़े अकेले ही रह गए हैं। बेटे शहर के हो गए हैं, कोई साथ रखने को तैयार नहीं। लगता है, जैसे सब कुछ छूट गया हो..."

निर्मला मुस्कुराई। उसने चाय का कप थमाते हुए धीरे से कहा "दूसरों की कही बातों को दिल से मत लगाओ। हमारे बेटे क्या गलत हैं? हर सुविधा दी है, नया घर बनवाया, घर में सारी सुविधाएं हैं, वॉशिंग मशीन, टेलीविजन, दो कमरों में एयर कंडीशनर, और न जाने क्या-क्या। हमें कोई मनाही थोड़े है उनके पास जाने की, दो-चार दिन रह आते हैं, पर हमेशा के लिए नहीं जा सकते शहर में, यहां दुकान है। गांव में रोज कितने लोगों के मुंह लगते हैं, राम-राम हो जाती है।"

फिर कहने लगी "मेरा भी मन यहां अड़ोस-पड़ोस में लगा रहता है। वहां शहर में छोटे-छोटे घरों में कैद होने वाली बात है। किसी से बातचीत नहीं यहां कोई किसी की बातें करे झट से संदर्भ जुड़ जाता है, और शहर में लोग अनजान, उनकी बातें अनजान और उनके भाव अनजान। आजकल तो विडियो कॉल की सुविधा है जब चाहो तब बात कर लो बच्चों से।"

"सच कहूं तो यहां की सुबहें, खेतों की हरियाली, लोग, लोगों की ख़ुशी-गमी ये सब हमारे जीवन का हिस्सा हैं। हम अपनी मर्ज़ी से ही यहां रह रहे हैं, किसी मजबूरी से नहीं। सच तो ये है, कि हम एक कड़ी हैं इस गांव और अपने बेटों के बीच। हम न रहें तो गांव उनके लिए सिर्फ बचपन की एक धुंधली याद बनकर रह जाएगा। अगर हम भी शहर चले जाएं तो यह गांव धीरे-धीरे उन्हें भूल जाएगा... और वे भी इसे।"

लाला जी ने एक गहरी सांस ली। उनके चेहरे पर अब कोई बोझ नहीं था, बल्कि आखों में संतोष और ख़ुशी की नमी थी। निर्मला की बातें उनके अंतर्मन को छू गईं।

"तुम बिल्कुल ठीक कहती हो," वे बोले, "हम ही तो हैं जो दोनों छोर को जोड़े हुए हैं। यदि हम यहीं रहते हैं तो बच्चों को गांव से जोड़े रखेंगे, और बच्चों के भीतर भी गांव जिंदा रहेगा।"

लाला जी का मन फूल की तरह हल्का हो गया था और घर से तैयार होकर वे सीधा सत्यवान पंच के घर पहुंचे और मुस्कराकर कहा–"भाई आपने जो कहा, मैं बुरा नहीं मानता

पर तुमसे एक बात साफ करना चाहता हूं – हम गांव में मजबूरी में नहीं रह रहे, बल्कि खुशी से रह रहे हैं। हमारे बेटे तो चाहते हैं कि हम उनके पास रहें, पर हमने ही गांव को नहीं छोड़ा। इस मिट्टी, इन लोगों से जो अपनापन है, वो किसी भी फ्लैट या सिटी पार्क में नहीं मिलेगा।"

"और एक बात और," लाला जी ने आगे कहा, "हम अपने बेटों और गांव, दोनों के बीच की कड़ी हैं। अगर हम भी चले जाएं, तो यह रिश्ता धीरे-धीरे फीका पड़ जाएगा। गांव बच्चों को भूल जाएगा और बच्चे गांव को भूल जाएंगे। इसलिए हम यहीं हैं – अपनी मर्ज़ी से, अपनी खुशी से।"

सत्यवान पंच ने लाला जी का हाथ थामकर गले से लगा लिया और हंसी में मित्रता की मिठास घुल गई।

मेरी राजस्थान यात्रा

सोनू कुमार

यात्रा का नाम सुनते ही हरेक का मन डोल उठता है। महिलाओं को जहां रोज का खाना बनाने और अन्य घरेलू कामों से मुक्ति मिल जाती है, वहीं बच्चों को नई जगह देखने और खेल-खेल में ज्ञानवर्धन के लिए अच्छा समय मिल जाता है। कार्यालय में काम करने वालों को काम से थोड़ी फुर्सत मिल जाती है और परिवार के साथ अच्छा समय बिताने का मौका मिल जाता है। यदि यात्रा का प्लान अचानक बन जाए तो यह और भी रोमांचित कर देता है। मुझे भी ऐसा ही मौका मेरी राजस्थान यात्रा के दौरान मिला।

पहले मैं, मेरी पत्नी और बच्चों के साथ मेरे होम टाउन हांसी के लिए सुबह चंडीगढ़ से रवाना हुए। वहां से मेरे माता-पिता के साथ हमने सालासर धाम के लिए यात्रा शुरू की। यात्रा के समय बातें कुछ ज्यादा होती हैं, मेरे पिता जी ने यात्रा के बीच में काफी संस्मरण सुनाए। उन्होंने बताया कि पहले काफी तेज लू चलती थी जिसके कारण पीलू बहुत मीठी हो जाती थी और उनका खट्टा-मीठा स्वाद मन को मोहित कर देने वाला होता था। इसके अतिरिक्त उन्होंने हमें बताया कि पहले इस रास्ते में बहुत सारे मिट्टी के टीले होते थे जो अब काफी कम हो गए हैं। नए-नए हाईवे और बढ़ती हुई आबादी के कारण ऐसा हुआ है। बातों-बातों में हम सालासर धाम पहुंच गए। यह भगवान हनुमान के भक्तों के लिए एक धार्मिक स्थल है जोकि राजस्थान के चुरू जिले में जयपुर-बीकानेर मार्ग पर स्थित है। हमने अपने वाहन को पार्किंग में लगाने के बाद हनुमान जी के मंदिर में चढ़ने वाला प्रसाद लिया, उसके बाद हम दर्शन करने के लिए लाइन में लग गए। उस दिन ज्यादा भीड़ न होने के कारण हमने बालाजी के दर्शन जल्दी ही कर लिए।

मंदिर परिसर से बाहर निकलने के बाद हमने वहां से खाटू श्याम के लिए यात्रा शुरू की। लगभग दो घंटे की यात्रा करने के उपरांत हम खाटू पहुंच गए। वहां पहुंचकर सबसे पहले हमने एक धर्मशाला में कमरे लिए। श्याम मंदिर सीकर जिले के खाटू में स्थित है जोकि महाभारत के एक महत्वपूर्ण पात्र बर्बरीक को समर्पित है जिसे कलियुग में श्याम के नाम से पूजा जाता है। एकादशी के दिन मंदिर में काफी भीड़ होती है और हमारे दर्शन वाले दिन भी एकादशी थी। मंदिर प्रशासन द्वारा भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुख्ता प्रबंध किए गए थे। जगह-जगह पर श्रद्धालुओं के लिए पीने के पानी की व्यवस्था थी और गर्मी के मौसम में भीड़ में कोई बेहोश न हो जाए उसके लिए कूलर और पानी के फव्वारों की भी व्यवस्था थी। लगभग एक घंटे के बाद हमें खाटू वाले श्याम के दर्शन हुए। भगवान के दरबार को फूल-मालाओं से सुसज्जित किया गया था, उनका वैभव देखते ही बन रहा था, वहां से दर्शन करने उपरांत हम धर्मशाला पहुंच गए। ज्यादा थकावट होने के कारण हम जल्दी सो गए।

सुबह नाश्ता करने के उपरांत हम सबने अजमेर के लिए प्रस्थान किया। सबसे पहले हम पुष्कर गए, जहां पर ब्रह्मा जी को समर्पित पूरे भारतवर्ष का एकमात्र मंदिर है। हमने ब्रह्मसरोवर में स्नान भी किया। उसके पश्चात हमने ब्रह्मा जी मंदिर के दर्शन किए। यह मंदिर 14वीं शताब्दी के लगभग बनकर तैयार हुआ था। मंदिर दर्शन के पश्चात हम महाराणा प्रताप के स्मारक पर गए। यह एक पहाड़ी पर बना हुआ था, जहां से पूरे अजमेर का विहंगम नजारा देखने को मिला। उसके बाद गेस्ट हाउस में थोड़ा आराम करने के बाद नसियां जैन मंदिर गए। इस मंदिर के केंद्रीय हिस्से में जैन धर्म से संबंधित स्वर्ण जड़ित मूर्तियां थी और इसके पिछले हिस्से में एक संग्रहालय में जैन धर्म की ऐतिहासिक गतिविधियों को मॉडल के माध्यम से दिखाया गया था। उसके बाद हम नरेली जैन मंदिर पहुंचे जोकि शहर के बाहरी हिस्से में स्थित था। यह मंदिर अरावली की पहाड़ी श्रृंखला में स्थित था। यह मंदिर लाल मिट्टी पत्थर से

बना हुआ था और इसमें 24 तीर्थंकर के जिनालय बनाए गए थे। इसका क्षेत्रफल काफी अधिक था और इसमें बच्चों ने घूम-फिर कर काफी मस्ती की। शाम को गेस्ट हाउस जाने से पहले अनासागर झील के तट पर घूमकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लिया, फिर गेस्ट हाउस जाकर स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। अगले दिन अजमेर में ही एक पहाड़ी पर स्थित पृथ्वीराज चौहान जोकि अंतिम हिंदू सम्राट थे, के स्मारक के दर्शन किए। इस स्थल पर पृथ्वीराज चौहान की एक बहुत बड़ी मूर्ति स्थापित की हुई थी। इसके अतिरिक्त विभिन्न पेंटिंग के माध्यम से उनके जीवन के क्रियाकलापों को दिखाया गया था। वहां से दर्शन उपरांत हम जोधपुर के लिए रवाना हुए। लगभग चार घंटे की यात्रा करने के उपरांत हम जोधपुर पहुंचे। वहां गेस्ट हाउस में दोपहर का खाना खाने के उपरांत थोड़ी देर के लिए सुस्ताए। यहां पर स्थित सभी महल, संग्रहालय शाम के पांच बजे तक ही खुले रहते हैं। जोधपुर को "ब्लू सिटी" भी कहा जाता है क्योंकि पुराने शहर में सभी भवनों की नीले रंग से पुताई की हुई है। पहाड़ से इनका नजारा देखते ही बनता था। उस शाम को हम सुरपुरा सफारी पार्क गए, वहां पर वेस्ट मैटेरियल से विभिन्न जानवरों की बेहतरीन मूर्तियां बनी हुई थी। बच्चों ने यहां गोरिल्ला, हाथी, डॉलफिन, विभिन्न प्रकार के डायनासोर और अन्य जंगली जानवरों की मूर्तियां देख खूब आनन्द लिया और अपना ज्ञानवर्धन भी किया। उसके पास ही सुरपुरा डैम था जोकि शहर की कोलाहल भरी जिंदगी से हटकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद देने वाला स्थल था, जहां पर सैलानियों के लिए बोटिंग की भी सुविधा थी।

यहां के भ्रमण पश्चात हम मंडोर उद्यान देखने गए। मंडोर पुराने समय में मारवाड़ राज्य की राजधानी हुआ करती थी। मंडोर उद्यान में जोधपुर के राजाओं के स्मारक बने हुए थे जोकि लाल सैंडस्टोन से बनाए गए थे। शाम को वहां पर लाइट एंड साउंड शो का आनंद लिया जिसमें वहां के इतिहास को बड़े सुंदर रूप से वर्णित किया गया था। उसके बाद हमने राजस्थानी खाने का आनंद जनता स्वीट होम में लिया, यहां की कचोरी, मिर्ची बड़ा का स्वाद निराला था। खाना खाने के बाद हम गेस्ट हाउस में आराम करने के लिए रवाना हुए।

अगले दिन सुबह उठकर जोधपुर के घंटाघर चौक पर गए। वहां हमने मिश्रीलाल हलवाई की लजीज लस्सी और स्वादिष्ट पेडों का आनन्द लिया। उसके बाद हम मेहरानगढ़ किला

देखने के लिए गए। यह एक पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ था। किला बहुत ही ऊँचा और विशाल था। यह किला राव जोधा सिंह द्वारा बनाया गया था, जिनके नाम पर जोधपुर का नामकरण हुआ। वहां पर हमने राठौड़ वंश के राजाओं द्वारा प्रयोग किए गए हथियार, उनकी पोशाक और पुरानी वस्तुएं देखी। इस किले में काफी हिंदी और अंग्रेजी फिल्मों को शूट किया गया है। महल से बाहर निकलते समय लोक धुनों पर नृत्य कर हमने खूब आनंद लिया।

इसके बाद हम जसवंत थडा के दर्शन करने के लिए गए। यह सफ़ेद संगमरमर से बना हुआ है, जिसे महाराजा सरदार सिंह ने जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में बनाया था। इस स्मारक के पास ही एक बहुत ही सुंदर झील है जो इसके सौंदर्य को चार चांद लगा देती है। जसवंत थडा के साथ लगती जमीन का प्रयोग राजसी परिवार के लोगों के दाह-संस्कार में होता है।

यहां से निकलने के बाद हम तूर जी का झालरा देखने के लिए निकले। यह संकरी गलियों में बनी हुई ऐतिहासिक बावड़ी थी जोकि 200 फीट गहरी थी। इसमें अभी भी काफी पानी था। कई बड़े बच्चे इस बावड़ी के ऊपरी हिस्से से कूदकर नहा रहे थे जोकि दिल को रोमांचित कर देने वाला था। संकरी गलियों से होते हुए हम चतुर्भुज हलवाई के गुलाबजामुन खाने पहुंचे जोकि 126 वर्षों से इस कारोबार में लगे हुए थे। मैंने इतने स्वाद गुलाबजामुन शायद ही अबतक जिंदगी में खाए थे। उसके बाद हम वहां की लोकल मार्केट घूमे जहां से हमने जूते और कपड़ों की खरीदारी की। उसके बाद हम जिप्सी रेस्टोरेंट में गए जहां हमने पारंपरिक लजीज राजस्थानी खाने का आनंद लिया। अगले दिन सुबह अपने गंतव्य के लिए रवाना हुए। यह एकाएक बना यात्रा कार्यक्रम बड़ा ही यादगार और रोमांचकारी था।

दृष्टिकोण

गुरू सरूप बंसल

कल शाम अचानक आई बारिश में मैं भीग गया था। घर जाकर अदरक वाली गरमा-गरम चाय और प्याज के पकौड़ों का लुत्फ उठाया। बारिश के मौसम का खूब आनंद लिया परंतु सुबह उठा तो हल्की हरारत सी महसूस हुई, एक दो छींक भी आई। दफ्तर में छुट्टी की अर्जी भेज दी बुखार की एक गोली खाई, स्टीम ली और थोड़ा आराम किया। 11 बजे तक तबीयत संभल गई फिर सोचा डॉक्टर को दिखा ही आऊं कुछ दवाई मिल जाएगी और दो-तीन दिन का मेडिकल सर्टिफिकेट भी बन जाएगा घर पर आराम करेंगे।

डॉक्टर के क्लिनिक में वेटिंग एरिया में बैठा था कि एक मजदूर टाइप आदमी आया। मजदूर टाइप कपड़े यानि पोलिस्टर के सस्ते और ग्रीस तथा तेल से काले मटमैले से। पैरों में घटिया सी घिसी हुई चप्पल। मेरे पास आकर बैठ गया। 'कौन सा नंबर चल रहा है सर' उसने मुझसे पूछा। वेटिंग एरिया में पांच और लोग भी बैठे थे अतः मैंने उससे कहा कि 'आपका सातवां नंबर है, मेरे बाद।

उसके मोबाइल पर फोन आया। इन लोगों को इतनी अक्ल नहीं है कि बात थोड़ा अलग होकर या रूम से बाहर निकलकर कर लें। वहीं मेरे पास बैठे-बैठे ऊंची आवाज में बात करने लगा। किसी सरदार जी से बात कर रहा था जैसे उधर वाला आदमी उसे कह रहा हो कि डॉक्टर को ध्यान से दिखा ले और दवाई लेकर आराम करे और ये आदमी, कोई नहीं सरदार जी, मैं ठीक हूं मैं ठीक हूं की रट लगाए था। और बार-बार दोहराए जा रहा था कि दवाई खाकर फैक्ट्री आ जाता हूं। घर पर क्या करूंगा।

सरदार जी, जो भी उस साइड में हों, ने थक हार के फोन रख दिया। उसके चेहरे पर बड़ी खुशी, संतोष और कृतज्ञता के भाव थे। मैंने पूछ ही लिया 'ये सरदार जी कौन हैं?'

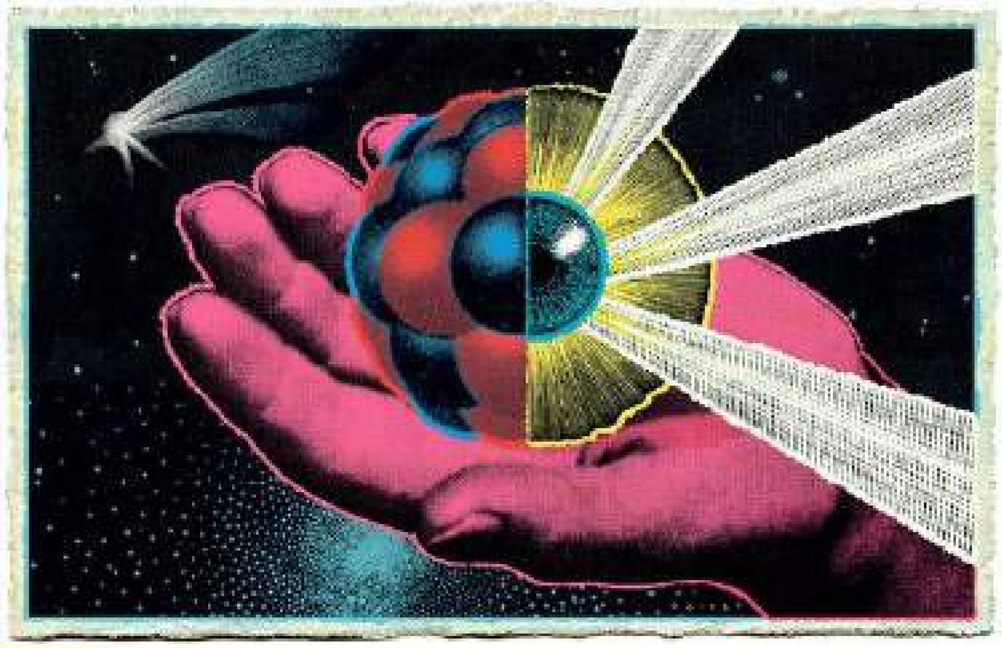

हमारी फैक्ट्री के मालिक हैं।"

मेरे एक प्रश्न ने उसे बात करने का निमंत्रण दे दिया। और उसने बात शुरु कर दी - सरदार जी ने जब फैक्ट्री शुरू की थी तो मैं सबसे पहला लेबर था उनका। सरदार जी और मैंने बहुत परिश्रम किया फैक्ट्री चलाने में। छोटी सी फैक्ट्री है हमारी। मुझे मिलाकर आठ लेबर काम करती हैं। सरदार

जी मालिक, फोरमैन, हमारे उस्ताद, सब हैं। सुबह से शाम तक हमारे साथ काम करते हैं। काम अच्छा करने पर शाबाशी देते हैं और नुकसान करने पर खूब डांटते हैं।
"कल बारिश खूब हुई और मैं बहुत बुरी तरह भीग गया था। रात को तेज बुखार हो गया था। सुबह फैक्ट्री जाने के लिए शरीर खड़ा ही नहीं हुआ। जब नहीं पहुंचा तो फोन आया और न आने का कारण पूछा। आवाज सुनकर पहचान लिया और बोले दवाई लेकर आना डॉक्टर से। आज आराम करना।"
"मैंने पूछा तुम तो कह रहे हो तेज बुखार था तो क्या सिर्फ आज का अवकाश?"
"अरे नहीं अवकाश लेकर क्या करूंगा। अभी दवाई लूंगा, घंटे भर में ठीक हो जाऊंगा। फिर दो-तीन दवाई खाकर अच्छा भला हो जाऊंगा उसके लिए अवकाश की क्या जरूरत। दवाई खाकर फैक्ट्री में काम करने से क्या दवाई असर नहीं करती? उसने कहा।
मैं क्या कहूं कुछ सोच नहीं पा रहा था। केवल उसका आत्मविश्वास, काम के प्रति उसका दृष्टिकोण, मालिक के प्रति इज्जत और प्यार। मेरी सोच गरीब अनपढ़ मजदूर के प्रति घिन्नता से बदलकर उसके प्रति उत्सुकता और थोड़ी इज्जत में बदलती जा रही थी।
वह फिर बोला "हमारी फैक्ट्री छोटी है केवल आठ लेबर हैं और सरदार जी। एक भी जन काम पर नहीं आता तो काम का हर्जा होता है। बाकी सारी लेबर और सरदार जी पर काम का बोझ बढ़ जाता है। इसलिए इतनी छोटी-छोटी बात पर छुट्टी नहीं ले सकते।"
उसके अंतिम वाक्य ने जैसे मुझे झकझोर कर रख दिया। मैं एक पढ़ा-लिखा सरकारी दफ्तर का कर्मचारी हूं। मैंने तो यह कभी नहीं सोचा कि मेरी वजह से काम का हर्जा होगा। मैंने तो कभी नहीं सोचा कि मेरे सहकर्मियों पर या मेरे अफसरों पर मेरे अवकाश लेने से काम का बोझ बढ़ेगा। मैं तो सही ढंग से बीमार भी नहीं था और क्या मैं डॉक्टर के पास दवाई लेने आया था? नहीं। मैं तो केवल दो-तीन दिन का मेडिकल सर्टिफिकेट लेने आया था ताकि दफ्तर न जाना पड़े और घर पर लेटा पलंग तोड़ूं या टेलीविजन देखूं।
पांच मरीज डॉक्टर के पास जा चुके थे। कम्पाउण्डर ने मेरा नाम लेकर आवाज लगाई अगला नंबर आपका है। मेरे पास बैठे मजदूर ने भी मुस्करा कर कहा- लीजिए अगला नंबर आपका है, और उसके बाद मेरा।
मैं जैसे विचारों के नींद से जागा और मैंने कहा अब मुझे ठीक लग रहा है। मैं दफ्तर जा रहा हूं। अगला नंबर आपका ही है और यह कहकर मैं दफ्तर जाने के लिए क्लिनिक से निकल आया।

राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

- सुब्रह्मण्यम भारती

नई सुबह

प्रवीन कुमार अरोड़ा

क्या! आश्चर्य से विवेक का मुंह खुला का खुला रह गया। उसने सूरज की ओर देखते हुए कहा - तुम्हारा मतलब है आज से ठीक 5000 वर्ष पहले भी हम इसी जगह... ऐसे ही सैर कर रहे थे और हर 5000 वर्ष के बाद फिर ठीक इसी समय.... इसी जगह.... ऐसे ही... सैर कर रहे होंगे। यह कैसे हो सकता है?

विवेक और सूरज दोनों गहरे दोस्त हैं। रविवार, छुट्टी का दिन था। दोनों दोस्त झील के किनारे सैर कर रहे थे। दोनों में बातचीत चल रही थी कि कितना घोर कलियुग चल रहा है। हर तरफ लूटपाट, मार-काट, महिलाओं के प्रति अभद्रता, घूसखोरी, भ्रष्टाचार, अत्याचार आदि बुराइयों का बोलबाला है। इंसानियत जैसे कि खत्म हो चुकी है। विवेक ने कहा - क्या कभी इस धरा पर स्वर्ग आएगा। कहते हैं कलियुग के अभी 40 हजार वर्ष और पड़े हैं। अभी ही घोर कलियुग है तो आने वाले समय में दुनिया न जाने कहां तक रसातल में जाएगी। सूरज ने विवेक की ओर देखते हुए कहा - तुम्हें सुनकर अचरज होगा कि 5000 वर्ष का एक कल्प होता है और इसमें भी कलियुग की कुल आयु मात्र 1250 वर्ष है। हर 5000 वर्ष के बाद इस कल्प की हु-ब-हु पुनरावृत्ति होती है। जैसे आप सिनेमा में 3 घण्टे की एक फिल्म देखते हैं और अगले शो में फिर से हु-ब-हु वही फिल्म दोबारा दिखाई देती है। ठीक इसी प्रकार ये सृष्टि का चक्कर भी 5000 वर्ष का है जो कि बार-बार दोहराया जाता है। जैसे सुबह, दोपहर, शाम, फिर रात होती है और रात के बाद फिर सुबह। जैसे 6 ऋतुएं होती हैं बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर इसके बाद दोबारा फिर बसंत। दिन-रात का चक्र 24 घण्टे का है तो दूसरा ऋतुओं का चक्र एक वर्ष का। ऐसे ही ये बड़ा चक्र 5000 वर्ष का है। ये सब सुनकर विवेक का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया था।

विवेक की जिज्ञासा बढ़ने लगी थी, उसने सूरज की तरफ मुखातिब होकर तपाक से पूछा, अच्छा सूरज ये सब जानकारी तुम्हें कहां से मिली। सूरज ने कहा - दरअसल मैं तुम्हें सारी बात विस्तार से बताता हूं। पिछले वर्ष की बात है, मैं काफी तनाव में चल रहा था। तुम्हें मालूम ही है कि मेरे सिर पर घर की कितनी जिम्मेदारियां हैं। बीबी-बच्चों की चिकचिक, कंपनी में टारगेट पूरा करने का दबाव, इन सबसे मैं कुछ चिड़चिड़ा होता जा रहा था। इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में, मैं सुकून की तलाश में था। किसी जानकार ने मुझे सलाह दी कि अगर मैं मेडीटेशन सीख लूं तो यह मेरे तनाव को कम करने में मददगार साबित होगा। उन्हीं से मुझे पता चला कि ब्रह्माकुमारीज सेंटर में मेडीटेशन सिखाया जाता है, जिसका पता www.brahamakumaris.org पर मिल जाएगा। बस फिर क्या था, अगले ही दिन मैं वहां पहुंच गया। अच्छा सूरज, जब तुम पहले दिन वहां गए तो क्या बात हुई, विवेक ने पूछा।

जब मैं पहले दिन सेंटर पहुचां तो डोर बेल बजाते ही एक सफेद वस्त्रधारी बहन सामने प्रकट हुई। चेहरे पर ऐसा

तेज था जैसे कि साक्षात कोई देवी हो। उन्होंने आने का कारण पूछा और कमरे में बैठने का इशारा किया। कुछ पलों के बाद एक अलौकिक मुस्कान लिए वे लौट आईं और सबसे पहले मेरा परिचय पूछा, घर परिवार के बारे में पूछा। फिर उन्होंने मेरा वास्तविक परिचय मुझसे करवाया जिससे मैं स्वयं आज तक अनभिज्ञ था। क्या मतलब - विवेक बोला। मतलब ये मित्र कि मुझे उस दिन पता चला कि मैं ये शरीर नहीं, बल्कि मैं तो एक आत्मा हूं। ये शरीर तो एक जरिया है जिसके द्वारा मैं, मेरी इन आंखों द्वारा देखती हूं, कानों द्वारा सुनती हूं, मुख द्वारा बोलती हूं। अगर इस शरीर में से आत्मा चली जाए तो क्या कोई मुर्दा शरीर किसी से बात करेगा, किसी की सुनेगा या किसी को देखेगा? इससे साबित होता है कि ये सब कुछ करने वाली मैं, आत्मा हूं। यानि अच्छा या बुरा करने वाली सब आत्मा है। तभी तो महात्मा यानि महान आत्मा, धर्मात्मा, पापात्मा आदि कहा जाता है, पाप शरीर तो नहीं कहा जाता। अपने अच्छे या बुरे कर्मानुसार ही फिर आत्मा को फल भोगना पड़ता है।

अगले रोज जब मैं सेंटर पर पहुंचा तो उस दिन बृहस्पतिवार था। मेरा स्वागत मुझे खीर खिलाकर किया गया। बताया गया कि हर वीरवार को हम बाबा को भोग लगाते हैं, यह उनकी टोली है। मैं उन बहन के चेहरे की ओर देखने लगा कि ये बाबा कौन हैं और ये टोली क्या है। वे मन्द-मन्द मुस्कुराई और बोली, परमात्मा को हम प्यार से बाबा कहते हैं और उन्हें जो भोग लगाया जाता है, उस प्रसाद को हम प्यार से टोली कहते हैं। मैं उनकी एक-एक बात बड़े गौर से सुन रहा था। उन्होंने आगे कहना शुरू किया, जैसे कल आपको पता चला था कि आत्मा और शरीर अलग हैं। हर इंसान का शरीर का पिता तो अलग होता है लेकिन हम सब आत्माओं का पिता एक ही है। वह भी हमारी ही तरह आत्मा है परंतु वह सर्वशक्तिमान है, सुप्रीम है, परम है तो उसे परम आत्मा यानि परमात्मा कहते हैं। जैसे हम आत्मा को देख नहीं सकते, ऐसे ही परमात्मा को देख तो नहीं सकते लेकिन उससे जुड़कर हर समस्या का सामना करने की शक्ति पा सकते हैं। खुशी और आनन्द में रह सकते हैं। अपनी कमजोरियों पर सहज ही विजय प्राप्त कर सकते हैं। फिर मुझे एक मेडीटेशन के कमरे में ले जाया गया जो कि लाल रंग के प्रकाश से आलोकित एवं गहन शान्ति से परिपूर्ण था। सामने एक चित्र था, जिसके बारे में मुझे बताया गया कि यह ब्रह्मा बाबा का चित्र है और उसके बारे में विस्तार से बाद में बताने को कहा गया। फिर मुझसे कहा गया जैसे आप अपने माता-पिता को, बच्चे को या किसी प्रियजन को जिससे आप प्यार करते हो, उसे जब याद करते हो और उसकी याद में खो जाते हो, ऐसे ही आज आपको परमात्मा की याद में खोना है। मन ही मन जैसे अपने संबंधियों से बात करते हो, ऐसे ही उनसे अपने मन की सारी बातें करनी हैं। वही दुखहर्ता, सुखकर्ता है। वही ज्ञान का सागर है, सुख का सागर है, प्रेम का सागर है। ये कहकर वे चुप हो गई और कमरे में गहन खामोशी छा गई। उस जगह न जाने कैसा जादू था कि मुझे ऐसे महसूस हो रहा था कि जैसे मेरे सिर से सारे बोझ उतर गए हैं। मैं परमात्मा की शरण में हूं और वह

मुझसे कह रहा है - 'मेरे बच्चे, तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूं न।' मुझे महसूस हुआ कि मेरी सारी परेशानियों को, चिंताओं को किसी ने हर लिया हो। एक अदभुत अनुभव था। विवेक क्या बताऊं तुम्हें, मन बिल्कुल

हल्का हो गया था। अंदर एक अजीब सी खुशी का अहसास था, लेकिन उस मिठास को, उस आनन्द को किसी दूसरे को कैसे बताया जा सकता है, वह तो खुद अनुभव करके ही महसूस किया जा सकता है। उस दिन की अनुभूति ऐसी थी जैसे गूंगे को गुड़ खिलाकर पूछा जाए कि बताओ स्वाद कैसा था।

विवेक और सूरज सैर करते-करते थोड़ा थकावट महसूस करने लगे तो पास ही पड़े एक बेंच पर बैठ गए। विवेक जो अब तक बड़े गौर से सूरज को सुन रहा था, यकायक बोला सूरज तुम्हें तो वहां जाकर बहुत ज्ञान हो गया है, मुझे तो लग रहा है कि मैं अपने दोस्त के साथ नहीं किसी महात्मा जी के पास बैठा हूं। क्या तुम बता सकते हो कि जब कोई इंसान मरता है तो क्या शरीर के साथ आत्मा भी मर जाती है? मरने के बाद आत्मा कहां जाती है? सूरज ने एक पल रुककर फिर कहना शुरू किया - ऐसे समझो कि ये शरीर जैसे एक रथ है और मैं आत्मा रथवान या रथी हूं। जब इस शरीर रूपी रथ का रथी नहीं रहता है और शरीर को अंतिम यात्रा पर ले जाते हैं तो क्या कहा जाता है, अर्थी जा रही है यानि 'अ' 'रथी' अथवा शरीर जिसका रथी चला गया है। शरीर से आत्मा निकलने के बाद तो डॉक्टर लोग भी कहते हैं कि बॉडी को ले जाओ। शरीर का मूल्य सिर्फ आत्मा के साथ ही है। आत्मा हमारे मस्तक में दोनों भृकुटी के बीच बैठकर इस शरीर को चलाती है। दरअसल आत्मा एक ज्योति पुंज है, एक शक्ति है, एक ऊर्जा है जो कि अजर, अमर, अविनाशी है। गीता में भी लिखा है कि आत्मा को न आग जला सकती है, न पानी गीला कर सकता है, न हवा सुखा सकती है और न ही आत्मा को काटा या किसी प्रकार से खत्म किया जा सकता है। ये शरीर खत्म हो जाता है तो कर्मानुसार आत्मा फिर कहीं और जन्म ले लेती है, जहां उस आत्मा का हिसाब-किताब होता है। कहा जाता है न कि कर्म हमेशा अच्छे करने चाहिए ताकि अगला जन्म किसी अच्छे घर में मिले।

विवेक की ओर निहारते हुए सूरज बोला - एक ही वक्त में दो बच्चे पैदा होते हैं। एक झोपड़पट्टी में तो दूसरा अम्बानी, अडानी जैसे अरब-खरबपति के घर में, तो दोनों बच्चों के ग्रह-नक्षत्र सब समान होते हुए भी अमीर और गरीब घर में पैदा होने का राज ये कर्म ही तो हैं। एक बच्चा सोने का चम्मच मुंह में लेकर पैदा होता है तो दूसरा भुखमरी और कंगाली की गोद में। सुकर्म से अच्छे घर में जन्म और बुरे कर्म से किसी झोपड़-पट्टी आदि में निम्न स्तर का जन्म होता है। तभी कहा जाता है कर्मों की गति बड़ी न्यारी है।

आखिर ये परमात्मा रहता कहां है? क्या मैं उनसे मिल सकता हूं, बात कर सकता हूं? क्या सतयुग, त्रेता, द्वापर आदि युग भी होते हैं? क्या सतयुग में वाकई इतना सुख होता है कि घी-दूध की नदियां बहती हैं? क्या वहां हर इंसान सुखी होता है? क्या कभी हमें इस कलियुगी दुख व अशांति से छुटकारा मिलेगा? हम सुनते हैं 108 की माला, 84 लाख योनियां, 33 करोड़ देवी-देवता, क्या है ये सब? क्या मनुष्य कर्मों का फल भोगने के लिए पशु-पक्षियों की योनि में भी जन्म लेता है? आत्माएं कहां से आती हैं, फिर कहां जाती हैं? अरे....अरे.......विवेक भैया, जरा रूको, सांस ले लो। तुमने तो प्रश्नों की झड़ी लगा दी। ऐसे लगता है कि तुम्हारे मन का सारा गुब्बार प्रश्नों की झड़ी के रूप में एकदम बाहर आ गया है। तुम कल मेरे साथ ही सेंटर पर चलना और इन सभी प्रश्नों के उत्तर भी पा लेना और मेडिटेशन का अनुभव भी कर लेना। कल की सुबह तुम्हारी जिंदगी की एक नई सुबह होगी।

चेहरे पर मुस्कान लाकर विवेक ने कहा - आज फिर तुम मुझे 'उस दिन' की तरह जवाब न देकर गोली दे रहे हो। 'किस दिन' की तरह सूरज ने सकपकाकर पूछा। 'ठीक 5000 साल पहले वाले दिन की तरह' - विवेक बोला। इस पर दोनों दोस्त खिलखिलाने लगे और चल पड़े घर की ओर एक नई सुबह की इंतजार में।

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका-सावित्रीबाई फुले

मनु अनेजा

मनुष्य अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक बहुत कुछ सीखता है। कहते हैं एक बच्चे के लिए सबसे पहली शिक्षक उसकी मां होती है। परिवार में रहकर बच्चा बहुत कुछ सीखता है जैसे बोलना, चलना इत्यादि। विद्यालय में भी शिक्षकों द्वारा बच्चे को पढ़ना, लिखना इत्यादि सिखाया जाता है। पहले महिलाओं को शिक्षा के

अधिकार से वंचित रखा जाता था। समय-समय पर महिलाओं की शिक्षा के लिए कई समाज सुधारकों ने समर्थन किया जिनमें से भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले थी जो ज्योतिराव फुले की पत्नी थी। सावित्रीबाई फुले (1831-1897) एक समाज सुधारक व शिक्षाविद थी जिनका जन्म महाराष्ट्र में हुआ था। उन्होंने 1848 में भारत का पहला बालिका विद्यालय खोला जो भारत का प्रथम महिला विद्यालय था। सावित्रीबाई और ज्योतिराव ने विधवा विवाह और छुआछूत जैसे सामाजिक सुधारों के लिए भी काम किया। उन्होंने 1848 में पुणे के भिड़ेवाड़ी इलाके में विभिन्न जातियों की 9 छात्राओं के लिए यह बालिका विद्यालय खोला था जिसके बाद सिर्फ एक वर्ष में उन्होंने 5 नए विद्यालय खोलने में सफलता पाई। उनकी बनाई हुई संस्था 'सत्यशोधन समाज' ने 1876 व 1879 के अकाल में अन्न सत्र चलाया और अन्न एकत्र करके आश्रम में रहने वाले 2000 बच्चों को खाना खिलाने की व्यवस्था की। सावित्रीबाई फुले ने समाज के एक बड़े वर्ग द्वारा विरोध को झेलने के बाद भी आज से लगभग 180 साल पहले, जब लड़कियों की शिक्षा एक अभिशाप मानी जाती थी, महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पुणे में पहला बालिका विद्यालय खोलकर पूरे देश में एक नई पहल की शुरूआत की। उन्होंने शिक्षा के साथ-साथ नारी सशक्तिकरण का नारा भी बुलंद करने का कार्य किया था। उन्होंने 1852 में पहले किसान स्कूल की स्थापना की। सावित्रीबाई ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह जीया जिसका उद्देश्य विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, महिलाओं की मुक्ति और दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना। शिक्षा के क्षेत्र में उनके अग्रणी योगदान के लिए समाज हमेशा उनका ऋणी रहेगा।

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नहीं।

- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

असली मित्र

रीना

एक व्यक्ति था उसके तीन मित्र थे। एक ऐसा था जिससे वह प्रतिदिन मिलता था। दूसरा ऐसा था जिसे वह प्यार करता था, पर मिलता था एक दो सप्ताह में। और तीसरा ऐसा था जिसे वह महीनों के बाद कभी-कभी मिलता था। एक बार उस व्यक्ति पर मुकद्दमा बन गया। वकील ने कहा कि मुकद्दमा बहुत सख्त है तो ऐसा गवाह तैयार करे जो कहे कि वो तुम्हें जानता है और

तुम पर लगे आरोप को गलत समझता है। वह व्यक्ति अपने पहले मित्र के पास गया और बोला कि मेरे ऊपर मुकद्दमा बन गया है, तुम चलकर मेरे पक्ष में गवाही दो। मित्र ने कहा देखो भाई तुम्हारी मेरी मित्रता अवश्य है, लेकिन गवाही देने के लिए मैं तुम्हारे साथ एक पग भी नहीं जा सकता। वह व्यक्ति बहुत दुखी व निराश हुआ। तभी उसे दूसरे मित्र का ख्याल आया। उसने उसके पास जाकर उसे गवाही देने को कहा। ये मित्र बोला मैं तुम्हारे साथ कचहरी के द्वार तक तो चल सकता हूं लेकिन गवाही नहीं दूंगा। वो फिर दुखी हुआ। फिर उसे अपने तीसरे मित्र का ख्याल आया जिसे वह महीनों के बाद थोड़ी देर के लिए मिलता था। उसने उससे अपनी बात की तो तीसरे मित्र ने जोश के साथ कहा मैं चलूंगा तेरे साथ, तेरे पक्ष में गवाही दूंगा और मेरा दावा है कि मुकद्दमा समाप्त हो जाएगा, तू बरी हो जाएगा। परंतु वह मित्र कौन है? वह है आत्मा। पहला मित्र है धन, संपत्ति, भवन, भूमि जिन्हें मनुष्य अपना समझता है और जिनके लिए रात-दिन हर समय चिंता करता है। दूसरा मित्र है ये संबंधी, रिश्तेदार, पत्नी, बच्चे, भाई-बहन जिनके लिए मनुष्य प्रत्येक कष्ट उठाता है। तीसरा मित्र है प्रभु-प्रेम और शुभ कर्म, जो प्रभु प्रेम के कारण किए जाते हैं।

भीतरी और गहरी बात 'दोस्त वो नहीं होते जो रोने पर आते हैं, दोस्त वो होते हैं जो रोने ही नहीं देते'।

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी भारत-भारती होकर विराजती रहे।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

तन्हाई

मुनीष भाटिया

अब ढलने लगा है सफर उम्र का,
बैठा हूं ख़ामोश, उदास, अकेला,
सोच रहा हूं बीते लम्हों को,
क्या पाया, क्या खोया बेवजह।
वो आंगन जहां थी हंसी की गूंज,
वहां सभी खोए खुद में रहते हैं,
जो रिश्ते कभी रोशनी थे मेरे,
वो अपने ही बोझ से झुके रहते हैं।
सब कुछ है, फिर भी अधूरा सा क्यों?
क्यों मन बेचैन और टूटा सा है?
क्या अपनापन ढूंढ़ना ही भूल है?
या यही उम्र का रहा सदा दस्तूर है?
जानता हूं, सब मजबूर बहुत हैं,
जिंदगी की रफ्तार तेज बहुत है,
पर कभी तो ठहरो, देखो मुझे,
मैं अब भी उसी दहलीज पर खड़ा हूं।
जिम्मेदारियां हैं, निभानी पड़ती हैं,
पर क्या मेरे लिए कुछ पल नहीं?
क्या यादें भी अब धुंधली पड़ीं?
क्या मेरा वजूद बस एक कहानी है?
उम्रदराज हूं, पर मन तो अब भी वही,
जो कभी बच्चों संग खेला था कहीं,
बस चाहता हूं थोड़ा अपनापन,
थोड़ा सा साथ, थोड़ा सा दुलार।
मत छोड़ो मुझे अपनों के बीच तन्हा,
एक दिन तुम भी आओगे यहां,
समझ सकोगे तब मेरी पीड़ा को,
जब ढूंढोगे किसी का सहारा वहां।

आजकल की शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य

अमरदीप सिंह

कक्षा में बैठे हैं बच्चे, सबके हाथ में फोन,
गूगल गुरु से पूछ रहे, “सर, क्या है सवाल का जोड़”।
शिक्षक बोले, “पढ़ो बेटा, जीवन का यही है लेसन,”
बच्चा बोला, “सर, AI कर देगा सब काम, आप क्यों लें रहे टेंशन”।
किताबें हो गई भारी, पर दिमाग रहा हल्का,
विद्यालय की पढ़ाई में नंबरों का बड़ा खेल है चलता।
टीचर बोलते “दिमाग के घोड़े दौड़ाओ और विषयों को समझो जरूर,”
पर आजकल बच्चे बोलते, “बस पास हो जाएं, वही है मंजूर।”
परीक्षा आई तो रटने की होड़ मच गई,
किताबें खुलीं, पर दिमाग बंद, समझ कहीं खो गई।
रट-रट के नंबर लाए, सोच-समझ गई भाड़ में,
डिग्री मिली हाथ में, पर हुनर गया झाड़ में।
शिक्षा एक बाज़ार है, यहां हर चीज़ का एक दाम है,
डिग्री, कोर्स, सर्टिफिकेट, यहां हर चीज़ का बस नाम है।
शिक्षा का असली मकसद कहीं खो गया,
डिग्री तो मिल गई, पर ज्ञान कहीं सो गया।
न सोच रही, न समझ रही, बस नंबर की है अंधी दौड़,
खुद से पूछ रहा हूं, ये कैसा शिक्षा का गठजोड़।
डिग्री की दुकानें हजार, फिर भी है हुनर की तंगी,
आज के भारत की यही है पढ़ाई की सच्ची रंगी।
नई शिक्षा नीति आई, बोला सरकार का मंत्री,
अब डिग्री नहीं, स्किल असली पहचान है संगी।
पर कोचिंग सेंटरों की दुकानें फिर भी चल रही,
रोजगार की आस में युवाओं की भीड़ अब भी जल रही।

जिंदगी की कहानी

महेन्द्र कुमार यादव

आप अपने घर की स्थिति के परिवर्तन के लिए
चुने गए हैं आपका जीवन इतना सरल नहीं होगा।
जिंदगी की वो कहानी जिसमें थोड़ा सा है
आंखों में पानी, वैसे तो पानी है जीवन।
लेकिन आंसू की भी है एक अलग कहानी
जीवन के कुछ पल जिसमें थे हसीन व असीम।
यादों के पल कुछ सुनहरी यादों के पल तो कुछ
टूटे हुए सपने तो कुछ रूठे हुए अपने।
यही तो जिंदगी का फसाना है कभी सुख तो कभी दुख का बहाना है
बस एक नए सवेरे के साथ व एक नए अंदाज के साथ
चलते जाना है, चलते जाना है।

जीवन का सफर

सफर कितना भी कठिन हो चलना पड़ता है,
कुछ पाने की आस में घर से निकलना ही पड़ता है,
घर से निकले तो कुछ उलझे हुए तो कुछ सुलझे हुए,
रास्तों से भी गुजरना पड़ता है।
मौसम की मार हो, धूप हो, बरसात हो,
कदम से कदम मिलाकर चलना ही पड़ता है।
लाख ख्वाहिशों के अंबार लिए हुए कुछ अधूरे सपने,
तो कुछ अपनों को छोड़कर आजीविका की तलाश में,
मुश्किलों के दौर से निकलना ही पड़ता है।
जब हम चले तो कुछ थके फिर रूके फिर चले,
बस इसी जद्दोजहद के साथ,
एक नए अंदाज के साथ,
चलना ही पड़ता है।
तू मेरा दोस्त है दो चार कदम आगे चल,
तू अगर पीछे चलेगा तो मैं डर जाऊंगा।
न हारना जरूरी है न जीतना जरूरी है,
ये जिंदगी एक खेल है, इसे खेलना जरूरी है।

स्वतंत्रता: एक अनुभूति

श्रीयांश गौनियाल
सुपुत्र अरूण कुमार

स्वतंत्रता किसी के लिए खुशी,
किसी के लिए अभिमान है,
किसी के लिए जीवन,
तो कोई इसके महत्व से अंजान है,
कोई तो जिए जाता है बस यूं ही,
और कोई इसके लिए वार देता जान है।
स्वतंत्रता किसी के लिए खुशी,
किसी के लिए अभिमान है।
कितने पराधीनता को अपना लेते हैं खुशी-खुशी,
और कोई स्वतंत्रता के लिए हो जाता बलिदान है।
यह हर मन की भावना है, विचार है,
फिर भी इसे समझना कहां आसान है।
स्वतंत्रता किसी के लिए खुशी,
किसी के लिए अभिमान है।
स्वतंत्रता की कीमत पिंजरे के पंछी से पूछो,
जिसके सपनों में सदा खुला आसमान है।
धन्य हैं राजगुरू, भगत सिंह जैसे वीर,
जो स्वतंत्रता के लिए वार गए अपने प्राण हैं।
स्वतंत्रता किसी के लिए खुशी,
किसी के लिए अभिमान है।

पापा की परी

अर्चना रानी

एक छोटी सी कली
बड़ी मुश्किलों से मिली
प्यारी सी है सूरत उसकी
कहते हैं उसको पापा की परी।
मांगा था हमने उसको भगवान से
एक अनमोल उपहार के रूप में
जिसकी हो प्यारी सी सूरत
जो हो भगवान की मूरत।
आई थी जब वो हमारे घर में
छाई थी खुशियों की लहर
प्यारी सी है सूरत उसकी
पूरी हुई हर मुराद हमारी।
एक छोटी सी कली
बड़ी मुश्किलों से मिली
प्यारी सी है सूरत उसकी
कहते हैं उसको पापा की परी।

कार्यालय के प्रांगण से

वर्ष के दौरान कार्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साह से बढ़-चढ़कर भाग लिया। इन कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है:

हिंदी पखवाड़ा: दिनांक 14.09.2024 से 27.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसका उद्घाटन दिनांक 14.09.2023 को प्रधान महालेखाकार महोदय ने दीपशिखा प्रज्वलित करके किया। उन्होंने कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया और कार्यालयीन कार्यों में सरल एवं सुगम हिंदी का प्रयोग करने पर बल दिया। पखवाड़े के दौरान कंप्यूटर पर हिंदी टंकण, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी श्रुतलेख एवं शब्द ज्ञान तथा अनुवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 27.09.2023 को आयोजित किया गया। प्रधान महालेखाकार महोदय ने हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी। इस अवसर पर हिंदी पत्रिका 'आभा' का विमोचन भी किया गया।

ध्यान और चिंतन: ब्रहमा कुमारी विद्यालय द्वारा दिनांक 23.09.2024 को ध्यान और चिंतन के लिए एक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों के बढ़-चढ़कर भाग लिया।

आई.ए. एंड ए.डी. नॉर्थ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2024-25: कार्यालय द्वारा भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग नॉर्थ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट का दिनांक

7 अक्तूबर 2024 से 9 अक्तूबर 2024 तक आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न कार्यालयों के टेबल टेनिस के खिलाड़ियों ने भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मानसिक रूप से दिव्यांगों के पुनर्वास के लिए सोसायटी (सोरेम) द्वारा प्रदर्शनी: कार्यालय परिसर में दिनांक 16.10.2024 को मानसिक रूप से दिव्यांगों के पुनर्वास के लिए सोसायटी (सोरेम) द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर खरीदारी की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह: कार्यालय परिसर में सर्तकता जागरूकता सप्ताह के उपलक्ष्य में दिनांक 28.10.2024 को 'सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि' की प्रतिज्ञा लेने हेतु आयोजन करवाया गया जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

आई.ए. एंड ए.डी. नॉर्थ जोन बेडमिंटन टूर्नामेंट: कार्यालय द्वारा भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग नॉर्थ जोन बेडमिंटन टूर्नामेंट का दिनांक 22 अक्तूबर 2024 से 25

अक्तूबर 2024 तक आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न कार्यालयों के बेडमिंटन के खिलाड़ियों ने भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राजभाषा कार्यशाला: भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली के राजभाषा अनुभाग के तत्वावधान में इस कार्यालय के समन्वयन में कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 22.11.2024 को आयोजित किया गया। इसमें चंडीगढ़ में स्थित भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

ऑडिट दिवस: दिनांक 16.11.2024 को ऑडिट दिवस मनाया गया। ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 23.11.2024 को एक 'रन इवेंट' का आयोजन भी किया गया, जिसमें कार्यालय के लगभग 250 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

नववर्ष: दिनांक 02.01.2025 को नववर्ष मनाया गया। कार्यक्रम का आरंभ ईश्वर की स्तुति (अरदास) से किया गया। प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यालय के सभी सदस्यों को नववर्ष की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जलपान का आयोजन भी किया गया।

गणतंत्र दिवस: दिनांक 26.01.2025 को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चण्डीगढ़ द्वारा की गई तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर देशभक्ति के गीत गाए गए तथा कार्यक्रम में भाग लेने वाले कलाकारों एवं बाल-कलाकारों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

स्वास्थ्य जांच शिविर: कार्यालय परिसर में दिनांक 30.01.2025 को मैक्स हेल्थकेयर हॉस्पिटल, फेज-6, मोहाली के सहयोग से स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शिविर में अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई।

आई.ए. एंड ए.डी. नॉर्थ जोन फुटबाल टूर्नामेंट : कार्यालय द्वारा भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग नॉर्थ जोन फुटबाल टूर्नामेंट 2024-25 का दिनांक 11 फरवरी

2025 से 14 फरवरी 2025 तक आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न कार्यालयों की फुटबाल टीमों ने भाग लिया। विजेता टीम को ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

राजभाषा पुरस्कार: राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 17.02.2025 को जयपुर में मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में उत्तर-1 क्षेत्र में 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालय के रूप में इस कार्यालय को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

योग शिविर : कार्यालय परिसर में दिनांक 14.03.2025 से 28.03.2025 तक योग कक्षा लगाई गई जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योगासनों की जानकारी दी गई। अच्छे स्वास्थ्य तथा रोगों के उपचार में योग की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में प्रकाश डाला गया। योग प्रशिक्षक द्वारा कुछ मुख्य योगासनों का अभ्यास भी करवाया गया जिससे अधिकारी एवं कर्मचारी लाभान्वित हुए तथा योग को अपने जीवन में अपनाकर बेहतर मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की ओर एक कदम बढ़ाया।

रक्तदान शिविर: दिनांक 29.05.2025 को राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (जी.एम.सी.एच.), सैक्टर-32, चण्डीगढ़ के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस नेक कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा 100 यूनिट ब्लड एकत्रित किया गया।

उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का विजिट: श्री के.एस. सुब्रमण्यन, उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (मानव संसाधन एवं विधिक) के नेतृत्व में एक टीम द्वारा इस कार्यालय का विजिट किया गया।

उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का विजिट: सुश्री संध्या शुक्ला, उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (रिपोर्ट स्टेट्स - उत्तरी क्षेत्र) के नेतृत्व में एक टीम द्वारा इस कार्यालय का विजिट किया गया।

आरटीआई प्रशिक्षण : क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जम्मू द्वारा प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, चंडीगढ़ में 21-22 अगस्त 2025 को 'सार्वजनिक खरीद की लेखापरीक्षा' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चंडीगढ़ में स्थित भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के विभिन्न कार्यालयों के विभागाध्यक्षों व समूह अधिकारियों ने भाग लिया।

नववर्ष

योग दिवस

रक्तदान शिविर

आरटीआई जम्मू द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

सेवानिवृत्ति

ऑडिट दिवस

सेवानिवृत्ति / स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम इकट्ठे कार्य करते हैं जिनकी कार्यक्षमता और अनुभव से लाभान्वित होते हैं, उनके दूर जाने का अर्थात् सेवानिवृत्त होने का समय आ ही जाता है। इस कार्यालय में उनके द्वारा की गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं और उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

क्र.	नाम (सर्व श्री/श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	सतिन्दर पाल सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2024
2	अंजय कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2024
3	विजय कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2024
4	मोहन चन्द्र	एम.टी.एस.	31.10.2024
5	दर्शन लाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2024
6	हरीश कुमार कक्कड़	पर्यवेक्षक	31.01.2025
7	कुलविन्दर सिंह गिल	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2025
8	जगमोहन सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2025
9	मोहिन्दर सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2025
10	राकेश कुमार शर्मा	पर्यवेक्षक	31.03.2025
11	अनिल शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2025
12	प्रवीन कुमार गुप्ता	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2025
13	प्रेम सिंह	एम.टी.एस.	30.04.2025
14	सुभाष ठाकुर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2025
15	सलोचना देवी	एम.टी.एस.	30.06.2025
16	जसवंत कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2025
17	कुलदीप कौशिक	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2025

श्रद्धांजलि

जब अचानक किसी साथी को हमसे किसी अदृश्य शक्ति द्वारा छीन लिया जाता है तो हमें विधि का विधान मानकर उसकी जुदाई की पीड़ा सहनी पड़ती है। अपने बिछुड़े हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उस असीम शक्ति से हम उनकी आत्मा की शान्ति तथा विपदा की घड़ी में उनके प्रियजनों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

क्र.सं.	नाम (सर्वश्री)	पदनाम	निधन की तिथि
1.	सुनील कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	24.01.2025

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची (2024-25)

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
		(सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती)		
1.	हिंदी निबंध	मनु अनेजा, स.ले.प.अ.	सुजाता गहलोत, स.ले.प.अ.	विकास कुमार, लेखापरीक्षक
2.	हिंदी श्रुत लेख एवं शब्द ज्ञान	कपिल अग्रवाल, आशुलिपिक	मनु अनेजा, स.ले.प.अ.	रितु, लेखापरीक्षक
3.	कंप्यूटर पर हिंदी टंकण	प्रवीन मलिक, डी.ई.ओ.	कपिल अग्रवाल, आशुलिपिक	करतार सिंह, डी.ई.ओ.
4.	अनुवाद	ललित कुमार, लेखापरीक्षक	मनु अनेजा, स.ले.प.अ.	नवीन कुमार, लेखापरीक्षक
5.	हिंदी भाषण	अमन कुमार, लेखापरीक्षक	महेन्द्र कुमार यादव, वरि. लेखापरीक्षक	सोनू कुमार, स.ले.प.अ.
6.	काव्य पाठ	गुरु सरूप बंसल, व.ले.प.अ.	महेन्द्र कुमार यादव, वरि. लेखापरीक्षक	प्रेरणा बंसल, लेखापरीक्षक

सरकारी काम-काज में मूल रूप से हिंदी टिप्पण/ आलेखन आदि के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार- (2023-24)

क्र.सं.	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
	(सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती)		
1. 2.	डॉ. लाखा राम, व.लेखापरीक्षक रमेश कुमार, स.ले.प.अ.	1. हेमंत मनुजा, स.पर्यवेक्षक 2. मनु अनेजा, स.ले.प.अ.	1. कुलदीप सिंह, व. लेखापरीक्षक

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक), वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	45%	35%	25%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।

गणतंत्र दिवस

सीएजी, दिल्ली द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा, चण्डीगढ़

प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़

www.aghry.nic.in / https://cag.gov.in/ag/haryana/hi